आयुर्वेद विमर्श

पारिवारिक स्वास्थ्य मासिक पत्रिका

वर्ष	—	53
अंक	—	196
इस अंक का मूल्य	—	20 रु
वार्षिक शुल्क	—	240 रु
आजीवन शुल्क	—	5000रु
नवम्बर	—	2023

सम्पादक एवं प्रकाशक
फूलचन्द
सहसम्पादक
नीरज कुमार

हमारा कोई विक्रय प्रतिनिध या शाखा कार्यालय नहीं है

पंजीकृत कार्यालय

आयुर्वेद विमर्श कार्यालय
हरिद्वार, उत्तराखण्ड
पोस्ट बॉक्स नं.–21

सम्पर्क

मोबाइल — 08057888802
09837573936
Email: shrigangadepot@gmail.com
Website: www.gangaayurvedic.com

अनुक्रमणिका

1. सत शिलाजीत गुण एवं उपयोग 2-5
2. आयुर्वेद परिचय–श्री गंगा® डिपो चिकित्सालय द्वारा निर्मित औषधियाँ 6-18
3. स्वास्थ्य–रक्षा पुरुषों में यौन रोग ओर उसकी चिकित्सा 19-23
4. महिला जगत–स्त्री प्रदर रोग व चिकित्सा 24
5. रोगनिदान एवं चिकित्सा–बवासीर, गठिया (अर्थाराईटिस), मोटापा, केशरोग 25-26
6. मधुमेह रोग 29
7. पाठकीय–रोग समस्याओं का समाधान समस्या एवं विमर्श डॉ. सिंघलजी द्वारा 30-34
8. आपका पत्र मिला 35
9. श्री गंगा डिपो चिकित्सालय मूल्य सूची 36-38
10. रत्न एवं रूद्राक्ष रहस्य 40-48

ग्राहक एवं पाठक
डायल करें–
8057888802

हमें आप कॉल कर सकते हैं। अपने मोबाइल फोन या लेंडलाईन से

गंगा

117 Years of Trust

सत शिलाजीत....

अत्यन्त ताकतवर रसायन

डॉ. एन.के. सिंघल द्वारा निर्मित

(सत शिलाजीत और आयुर्वेद शास्त्र)

आयुर्वेद अथर्ववेद का उपांग है इसी से इसकी प्राचीनता का ज्ञान हो जाता है कि जब संसार के मानव आधि–व्याधि ग्रस्त होने लगे तब हमारे अग्रजन्मा ऋषियों ने आयुर्वेद के ज्ञान का लोक कल्याण की भावना से प्रचार एवं प्रसार किया और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए उन दिव्य रासायनिक औषधियों का भी ज्ञान कराया, जिससे आज भी मानव मात्र लाभान्वित हो रहा है। उन्हीं औषधियों में यह **सत शिलाजीत** भी एक है जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करती है तथा रोगी मनुष्यों के रोग का निवारण करती है। हम चरक की उक्ति प्रदर्शित करते हैं जिसमें एक ही पंक्ति में **सत शिलाजीत** की महिमा का वर्णन किया है– ''संसार में मनुष्यों को होने वाला ऐसा कोई रोग नहीं है जिसको **सत शिलाजीत** दूर न कर सकें।'' वर्ष में कम से कम 60 दिन अवश्य सेवन करें स्वस्थ रहने के लिये। पूरे वर्ष सेवन करें तो सदैव निरोगी रहेंगे।

विशुद्ध सत शिलाजीत के लक्षण

हम पूर्व में ही बता चुके हैं कि आजकल विष में भी मिलावट होने लगी है अन्य पदार्थों की बात ही क्या है, अतः रोगियों की सुविधा के लिए यहां शुद्ध **सत शिलाजीत** के कुछ लक्षण तथा पहचान भी बताना उचित समझते हैं–

गोमूत्र गन्धवत् कृष्णां स्निग्धं मृदु तथा गुरुः।
तिक्तं कषायं शीतं च सर्वेश्रेष्ठं तदायसम्।
सत शिलाजीत कफ वातसघ्नं तिक्तोषणं क्षयरोगनुत्।
वन्हौक्षिप्त भवेत् लिंगाकारं विधूम्रकृत।। नि.र.।।

अर्थात् जिसमें गौमूत्र के समान गन्ध आती हो, चिकनी, मुदृ, वजन में भारी, स्वाद में कड़वी तथा कषैली हो ऐसी **सत शिलाजीत** लौह मिश्रित पाषाण से प्राप्त होती है, और इसकी परीक्षा है कि इसको अग्नि पर डाल दिया जाए तो लिंग के आकार में खड़ी हो जाती है तथा पानी में डाल दें तो तार छोड़ती है, ऐसी **सत शिलाजीत** सर्वोत्तम होती है और यही आरोग्यता प्रदान करती है।

सत शिलाजीत के गुण

शुद्ध **सत शिलाजीत** एक श्रेष्ठ रसायन है जो शरीर के रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र धातु की वृद्धि कर शरीर को लौह तुल्य बनाती है, टूटी हुई एवं कमजोर अस्थियों की संधान कारक और पुष्टि कारक है वीर्य में होने वाली सभी विकृतियों को दूर करती है, इसलिए सब प्रकार के प्रमेह को ही नहीं मधुमेह (डायबिटीज) में लाभ करती है। रक्त की कमी, क्षय, कास, शोथ, चोट या व्रण के कारण होने वाली वेदना को खाने या लगाने से तत्काल लाभ करती है।

मधुमेह पर सत शिलाजीत

मधुमेह से पीड़ित रोगी को जिसे चिकित्सकों ने असाध्य बताकर त्याग दिया हो, बुद्धिमान चिकित्सक रोग को पंचकर्म शोधन कराकर हमारी शालशारादिगण भावित **सत शिलाजीत** का सेवन करायें, इस प्रकार तैयार की गयी **सत शिलाजीत** लगभग 1 किलो सेवन कराने से रोगी का शरीर स्वस्थ्य होकर बल, वर्णयुक्त होता है तथा मधुमेह रोग से मुक्त होता है और पूर्ण आयु का उपभोग कर सकता है। यह हमारा पूर्ण अनुभव है कि जहाँ मधुमेह में ''इंसूलीन'' तात्कालिक लाभ करती है, वहां यदि उपरोक्त शालशारदिगण भावित **सत शिलाजीत** का प्रयोग किया जाये तो शीघ्र लाभ प्राप्त होता है।

श्री गंगा® डिपो चिकित्सालय द्वारा निर्मित सत शिलाजीत

आपका शरीर कैसा भी खुश्क हो गयाहो शक्ति भले ही नष्ट हो गयी हो यौवनावस्था की तेजी चाहे जाती रही हो शरीर का रक्त घूमना बन्द हो गया हो चेहरे की सुर्खी उड़कर मुंह का रंग फीका पड़ गया हो। गाल पिचक गए हों छाती की अस्थियां निकल आयी हो ऐसी अवस्था में **सत शिलाजीत** का कम से कम 30 दिन के विधिपूर्वक सेवन कर लेना अति आवश्यक है साथ में कामराज कैप्सूल 1–1 कैप्सूल सुबह व रात को साथ ले अगर उपरोक्त सभी लक्षण हैं तो आप नपुंसकता की ओर अग्रसर हैं तो उपरोक्त दोनों के साथ सिंह विजय पाक भी 30 दिन सेवन करें तो आपको फिर वर्ष भर कोई औषधि लेने की आवश्यकता नहीं है यह विधि आपके शरीर को सबल, अस्थियों को मजबूत सर्वांग गुलाबी मुखमण्डल को दृढ़ पुष्ट और सुन्दर पैरों को सशक्त नेत्रों को तेजस्वी मन को उत्साही और आनन्दयुक्त बनाकर सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करेगी और स्वप्नदोष, मूत्रकृच्छ, बहुमूत्र धातु का नाश होना अनेक प्रकार का प्रमेह, मूत्र के साथ लार गिरना, पाखाने के साथ वीर्य का निकलना, पेशाब के साथ जलन तथा सूर्ख पेशाब होना, हमेशा स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, नपुंसकता, सुस्ती, अशक्ति

आदि रोगों को 30 दिन में समूल नष्ट करके शरीर में नया खून, नयी ताकत, नया जोश तथा उत्साह पैदा करेगी खोए जीवन का आनन्द दोबारा मिलेगा। जो रोगी 30 दिन से अधिक सेवन कर सकते हैं उन्हें तो अधिक लाभ होगा।

उपयुज्य तुलामेकाममृतस्याजन्मतः।
विषिज्य मधुमेहाख्यं मातकं रोगकारकम्॥
वपूर्वर्णबलोपेतः शरालीवत्यनाम वः।
शत शतं तुलयां तु सहस्त्राम् दशतौलिकम्॥ चरक॥

अर्थ– 1 तुला (10 कि. ग्राम) **सत शिलाजीत** के सेवन से मनुष्य महापीड़ा युक्त मधुमेह को जीतकर 100 वर्ष तक आरोग्यता से जीवित रह सकता है। और शरीर अतिपुष्ट हो जाता है। 10 किलो खाने से 100 वर्ष तक की आयु प्राप्त करता है, ऐसा चरक भगवान कहते हैं। अतः हम दृढ़ शब्दों में कहते हैं कि हमारी **सत शिलाजीत** के सेवन से मधुमेहादि असाध्य रोगों का शीघ्रातिशीघ्र निवारण होकरशरीर कामदेव के समान तेजवान बनता है।

मूल्य– 50 ग्राम 750 रु., 100 ग्राम 1500 रु.।

सत शिलाजीत सेवन विधि

सत शिलाजीत को किसी तरह पदार्थ दूध में घोलकर पीना चाहिए। साधारणतया दूध में घोलकर सभी रोगों में प्रयोग किया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि बिना तरल पदार्थ में घोले हुए **सत शिलाजीत** का प्रयोग नहीं करना चाहिए। दूध में अति उत्तम रहता है। चने के दाने के बराबर सुबह–शाम दूध में घोलकर कर लें।

गंगा® सत शिलाजीत

सत शिलाजीत के गुणों व जिन लक्षणों का आयुर्वेद में वर्णन किया गया है उन लक्षणों वाली श्रेष्ठ रसायन **सत शिलाजीत** का हम विशाल मात्रा में दुलर्भ स्थानों से संग्रह करते हैं। इसके पश्चात् अपनी निर्माणशाला में विद्वान् चिकित्सकों की देख–रेख में शास्त्रोक्त विधि से इसका शोधन करते हैं। हमारी **सत शिलाजीत** की विशषता यह है कि एक तो हम इसे केवल ''सूर्यताप'' द्वारा ही शुद्ध करते हैं तथादूसरे शोधन के समय त्रिफला, गिलोय, विदारीकन्द आदि औषधियों से भावित करते हैं जिससे इसकी रोग दूर करने की शक्ति बढ़ जाती है। यही कारण है कि हमारी **सत शिलाजीत** की प्रशंसा बड़े–बड़े विद्वान चिकित्सकों एवं डाक्टरों ने की है और अनेकों प्रमाण पत्र दिए हैं यह है कि हमारे अतिरिक्त और कहीं से भी आपको विशुद्ध और प्रमाणिक रीति से

शोधित **सत शिलाजीत** नहीं मिल सकेगी। **सत शिलाजीत** जितनी रोगियों के लिए लाभदायक है उतना ही स्वस्थ मनुष्यों के लिए भी लाभदायक है। यह शरीर के लिए उत्तम कोटि का टॉनिक है। जिसके सेवन से मनुष्य सदैव प्रबल और प्रसन्न रहता है। यह स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए एक उत्तम टॉनिक, रसायन, बाजीकरण स्नायु को ठीक करने वाला एवं नयाखून बनाने वाली औषधि है। यह शरीर के सम्पूर्ण अवयवों को पुष्ट करके नए द्रव्य बनाने में सहायक होती है। शरीर के द्रव्यों को अनुचित ढंग से बाहर नहीं निकलने देती। इस प्रकार यह हमारे शरीर के लिए अमृत तुल्य महौषधि है, क्योंकि यह वात, पित्त और कफ तीनों दोषों से होने वाले रोगों को दूर करने में इसलिए समर्थ हो जाती है कि इन दोषों के निवारणार्थ गिलोय, त्रिफला जैसे त्रिदोषशामक औषधियों का क्वाथ इसमें डालते हैं जो **सत शिलाजीत** के गुणों को बढ़ा देता है। अतः हम अनुभव के साथ कहते हैं कि यह स्वास्थ्य को प्रदान करने वाली **सत शिलाजीत** सम्पूर्ण रोगों को नष्ट कर, शरीर को लोहयुक्त बनाकर लाभ करेगी, एक बार अवश्य प्रयोग कर लाभ उठायें।

सत शिलाजीत कोर्स :– एक माह कोर्स (सत शिलाजीत + चूर्ण + टेबलेट)

मूल्य – एक माह कोर्स 1500 रु.। ■

117 वर्षों से अनवरत् आपकी सेवा में...

श्री गंगा डिपो, हरिद्वार

की

गंगा सत शिलाजीत
Ganga Sat Shilajit

जग प्रसिद्ध रसायन जो स्नायु एवं अन्य शारीरिक दुर्बलताओं को दूर करके नवजीवन प्रदान करती है।

A famous and proved Ayurvedic Rasayan to be used as nervous & general tonic. Useful in many different diseases.

गंगा

अर्थोजिन ऑयल

अधरंग नाशक हर्बल ऑयल

जोड़ों के दर्द में लाभकारी वात नाशक तेल

पर्वतराज हिमालय की अनेकों जड़ी–बूटियों के योग से बनाये हुए इस **अर्थोजिन ऑयल** की आयुर्वेद के ऋषि–महर्षियों ने जितनी प्रशंसा की है उसे प्रायः आयुर्वेद शास्त्र को समझने वाले जानते हैं। जिस प्रकार वायु रोगों को दूर करने के लिए **अर्थोजिन ऑयल** सेवन किया जाता है। उसी प्रकार वायु रोग पीड़ित शरीर अंगों की मालिश के लिए **अर्थोजिन ऑयल** का सेवन किया जाता है। वास्तव में खाने की दवा के साथ–साथ मालिश भी की जाती है। इस दोहरे इलाज से अच्छा लाभ होता है। जोड़ों, पुट्ठों के दर्दों में, शरीर के किसी अंग के सूज जाने पर **अर्थोजिन ऑयल** की मालिश की जाती है। इसके मालिश करने से रुधिर का संचार तीव्र होकर उस अंग को गर्मी पहुँचती है। यही नहीं पसली के दर्द, शरीर की कमजोरी, निरन्तर ज्वर बने रहना, निमोनिया, गुमचोट पर भी इसकी मालिश करके सिकाई करने से बहुत लाभ होता है। अधिक क्या कहा जाए यह 80 प्रकार के वातरोगों के लिए लाभदायक है। आयुर्वेद शास्त्र के इस सुप्रसिद्ध तेल की प्रतिदिन हाथों पांवों पर मालिश कराकर सोने से चलने–फिरने की शक्ति अन्त तक बनी रहती है। अधरंग में उन अंगों पर मालिश करें जो अधरंग में शिथिल पड़ गए हैं। यह तेल कमजोर बच्चों के लिए भी परम लाभकारी है। मालिश करने के पश्चात् वायुरहित स्थान पर स्नान करना चाहिए। वृद्ध व्यक्तियों के वायु के कठिन रोगों में इसे पीने के लिए दिया जाता है। परन्तु चिकित्सक की सलाह पर ही प्रयोग करें। इतने प्रसिद्ध और गुणकारी तेल को हम बनाते भी विधिपूर्वक हैं। हम इसको ताजी और शुद्ध औषधियों द्वारा बड़ी सावधानी से निर्माण करते हैं। इसमें शतावर का ताजा रस डालना विशेष लाभदायक होता है। यह हमें हरिद्वार के पर्वतीय जंगलों से आसानी से प्राप्त होता है। यह हमारी सावधानी, बनावट में शुद्धता और शास्त्रीय तरीके से बनाने के कारण हमारा, **अर्थोजिन ऑयल**, विशेष उपयोगी बनता है। **अर्थोजिन कैप्सूल** के साथ यथाशीघ्र असर दिखाता है। एक शीशी मंगाइये और प्रयोग करके देखिये। यह दवा अच्छा असर करती है। **अर्थोजिन कैप्सूल** एवं अर्थोप्लस कैप्सूल के साथ प्रयोग करें। **मूल्यः 100 मि.ली. 400 रु., 100 मि.ली. × 3 1100 रु.। अर्थोजिन कैप्सूल 60 कैप्सूल 500 रु.** ■

गंगा अर्थोज़िन कैप्सूल

इस पंच भौतिक शरीर के दोष क्रियान्तर्गत में वात, पित, कफ, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्रादि धातुओं में वायु को ही प्रधान माना गया है। पितं पंगु कफः पंगु पंगवो मल धावतः। वायुना यत्र नीयन्ते यत्र गच्छन्ति मेघवत्।। वास्तव में सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो वायु शरीर के भिन्न–भिन्न स्थानों में विद्यमान होकर अन्न को ठीक रीति से पकाना, मलमूत्रादि को यथा समय निकालना, शरीर को आरोग्य रखना इत्यादि कार्य अपने पूर्ण अंशों में रहते हुए करती है। परन्तु यदि दोषमय श्रेष्ठ वायु अपने श्वासों से वृद्ध अथवा न्यून हो तो अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देती है जैसे अपतंत्रक, गृधसि, आक्षेप, आदि यह वायु रोग प्रायः प्रारम्भ से ही आसाध्य होते हैं। आयुर्वेद शास्त्र में वायु रोगों के लिए **अर्थोज़िन कैप्सूल**, **आर्थो प्लस कैप्सूल** में मौजूद जड़ी बूटियों की बड़ी प्रशंसाकी है। इसके अतिरिक्त अनुभव से भी पाया गया है कि यह बहुत उपयोगी है। हम इस औषधि को श्रेष्ठ और पूरी औषधियाँ भस्में आदि डालकर मशीन से इसकी कुटाई करते हैं। जिसमें सवा लाखकी बजाये ढाई लाखचोटें लगाई जाती हैं। यह रसायन रूप कैप्सूल अनेक प्रकार के असाध्य अर्थात् 80 प्रकार के वायुरोग, 40 प्रकार के पित्त रोगएवं अर्श, संग्रहणी, भगन्दर मन्दाग्नि को दूर करता है। पुरुषों की स्वास्थ्य वृद्धि करता है और स्त्रियों के कष्ट के दिनों के समस्त उपद्रव दूर कर सन्तानोत्पत्ति योग्य बनाता है। हम शास्त्र के लिए नियमानुसार प्रथम दवा को त्रिफला क्वाथ में शुद्ध कर लेते हैं जिससे इसका कब्ज कारक दोष समाप्त हो जाता है। वृद्धावस्था में विशेषकर मुख्य रूप से वायु प्रधान रहती है। इस अवस्था में वायु के अनेक रोग घर कर लेते हैं जैसे हाथ पांव में शून्यता रहना, जोड़ों तथा कमर में भयंकर दर्द रहना। अतः उपरोक्त कारणों में **आर्थोज़िन कैप्सूल** औषधि है। यह पथ्य, परहेज, रहित, उत्तम औषधि है। 1–1 कैप्सूल दिन में तीन बार इसके साथ–साथ **अर्थोज़िन ऑयल** की मालिश अवश्य करें तथा अर्थो प्लस 1–1 कैप्सूल का दूध से सेवन करें। यह स्पोंडिलाइटिस एवं गठिया में भी अत्यंत लाभकारी है। **मूल्य 60 कैप्सूल 500 रु. व 120 कैप्सूल 950 रु.।** ■

गंगा अर्थोप्लस कैप्सूल

(ग्रघसी एवं गठिया स्पोंडेलाटिस एवं स्याटिकानाशक हर्बल)

क्या आप वायु रोग से पीड़ित हैं? आपके हाथ–पैर अथवा शरीर के सम्पूर्ण जोड़ों में दर्द है? शरीर में अकड़न या उठना–बैठना कठिन हो गया है? शरीर में सुई चुभने जैसी पीड़ा होती है तो आप अर्थो प्लस कैप्सूल मंगाकर अवश्य सेवन कीजिए। यह कैप्सूल उपरोक्त लक्षणायुक्त सम्पूर्ण वात व्याधियों को समूल नष्ट करता है। इसके अतिरिक्त, सन्धिवात् आमवात, गठिया जैसे कठिन रोगों को 30 दिन के प्रयोग से लाभ करता है। साथ में अर्थोज़िन कैप्सूल एवं अर्थोज़िन ऑयल का सेवन करें। **मूल्य 60 कैप्सूल 500 रु. व 120 कैप्सूल 950 रु.।**■

सौन्दर्यबहार (कान्तिप्रलेप)
(Herbal Cream)

आपकी सेवा में नया सौन्दर्यबहार उपस्थित करते हुए हमें पूर्ण सन्तोष का अनुभव होता है। पिछले सौन्दर्य बहार से यह अधिक गुणकारी एवं उत्तम है। यह नया योग त्वचा को कोमल एवं गोरी करने के साथ–साथ सीप, झाँई, चकत्ते, मुँहासे, आदि शीघ्र दूर करता है। विशेषता यह है कि यह लगातार थोड़ा सा मलने से त्वचा पर रक्षात्मक आवरण छोड़ता हुआ शुष्क हो जाता है। इस तरह धूल, धूप और मौसम के असर से त्वचा को खराब होने से बचाता है। इस पर पाउडर भी अच्छी तरह लगता है। आप इसकी सुगन्ध से प्रभावित हुए बिना न रह सकेंगे रात्रि को गर्म जल या किसी उत्तम साबुन से धोकर कपड़े से त्वचा खूब सुखा लीजिए। अब सौन्दर्य बहार लगाकर धीरे–धीरे मलिये, जब तक यह पूरी तरह खुश्क न हो जाय। इससे मुहासे व चकत्ते जड़ से नष्ट हो कर चेहरा चाँद की तरह खिल उठता है। दिन में स्नान के उपरानत चेहरे, गर्दन और हाथों पर लगाइये, ऊपर से पाउडर लगाना चाहें तो लगायें। दाढ़ी बनाने के बाद इसे क्रीम की तरह लगायें। आप बाजार से मिलने वाली क्रीम, स्नो प्रयोग करते हैं, जो निश्चित ही अन्त में हानिकारक सिद्ध होते हैं। आपके सौन्दर्य प्रसाधन हमारे इस सौन्दर्य बहार के बिना अधूरे हैं याद रखिये। यह अन्य सब प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधनों से उत्तम व लाभकारी है। आप भी यह उत्तम औषधि मंगाकर लाभ उठावें। **मूल्य 50 ग्राम 300 रु. व 150 ग्राम 850 रु.।** ■

सम्मानित पाठकों से निवेदन है कि आपके पते पर एक से अधिक पत्रिकाऐं भेजी जा रहीं हैं। कृपया अपने मित्रों को जो इन बिमारियों से ग्रसित हैं, उनको आयुर्वेद विमर्श भेंट करें, इससे उनका भी भला होगा एवं आपको भी यश प्राप्त होगा।

भवदीय
सम्पादक

गंगा

पाईलैक्सो कैप्सूल

(हर्बल औषधि) बवासीर में लाभदायक

अर्श को आयुर्वेद के विद्वानों ने महारोगों में गिनाया है, वास्तव में यह रोग शत्रु के समान प्राणों को कष्ट पहुंचाता है। इसलिए इसका नाम अर्श आधुनिकता में पाईल्स अधिक प्रचलित हो गया है इसलिए हमने इस संकट में छुटकारा दिलाने के लिए **पाईल्स** का संशोधित योग नवीन रीति से तैयार किया है, इसके सेवन से 5–10 वर्ष पुरानी खूनी या बादी दोनों प्रकार की बवासीर ठीक हो जाती है। कुछ दिनों तक लगातार सेवन करने से मस्सों से रक्त आना बिल्कुल बन्द हो जाता है दर्द दूर हो जाता है और मस्से सूख जाते हैं जो व्यक्ति बवासीर की चिकित्सा करके निराश हो गए हैं, उन्हें हमारी यह **पाईलैक्सौ कैप्सूल** अवश्य सेवन करना चाहिए। **पाईलैक्सौ** 1–1 कैप्सूल दिन में तीन बार ताजे जल से लें, साथ में **पाईलैक्सौ ऑयल** एवं अग्निवर्धक चूर्ण सेवन करायें। जिन्हें ऑप्रेशन बताया गया है वह ऑप्रेशन से पहले सेवन करें शायद करवाना ना पड़े।

मूल्य 60 कैप्सूल 500 रु. व 120 कैप्सूल 950 रु.। ■

गंगा

गंगा पाईलैक्सो आयल

कुछ रोग ऐसे होते हैं जिनसे शीघ्र छुटकारा पाने के लिए खाने की औषधि के साथ–साथ लगाने की औषधि भी प्रयोग करनी आवश्यक होती है अथवा जो लोग औषधि खाने से हिचकते हैं तथा खाने की औषधि सेवन करने पर भी रोग से मुक्ति नहीं मिलती, ऐसी स्थिति में मस्से वाली बवासीर के लिए **पाईलैक्सौ ऑयल** का प्रयोग करना चाहिए। इस औषधि के लगाने से थोड़े ही समय में अत्यन्त कष्टदायी मस्से भी सूख जाते हैं और दोबारा नहीं होने पाते। यह तेल मस्सों को गिरा देता है। इसके प्रयोग करने में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। अतः हमारी इस औषधि से अवश्य लाभ उठाएं। साथ में **पाईलैक्सौ कैप्सूल** सेवन करायें।

मूल्य 30 मिली. 300 रु. व 60 मिली. 550 रु.। ■

अग्निवर्धक चूर्ण

भूख बढ़ायें, पाचन क्रिया को ठीक कर,
पेट दर्द, कब्ज एवं एसिडिटी में लाभकारी।

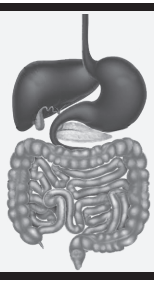

निर्माता: श्री गंगा डिपो, हरिद्वार

गंगा

अस्थमारी टैबलेट

(दमा नाशक)

कुछ लोगों का मत है कि दमा दम के साथ जाता है परन्तु हमारी दवा के सेवन से दमे में अत्यन्त लाभ होता है। हां इतना जरूर है कि रोग जितना पुराना होगा दवा उतने ही अधिक दिन तक सेवन करनी होगी। हम यह अनुभव के साथ कह सकते हैं कि हमारी औषधि के सेवन से दमें का रोगी रोगमुक्त होकर जीवन के आनन्द उपयोग कर सकता है। दमे के जबरदस्त दौरे पर रोगी बेचैन क्यों न हो एक खुराक दवा से नींद आ जाती है। साथ में काँसोना टेबलेट व अस्थमारी पाउडर दें। दवा मधु या अदरक के रस के साथ दें। 1–1 कैप्सूल दिन में तीन बार तथा अस्थमारी पाउडर आधा–आधा चम्मच दिन में तीन बार लें।

मूल्य– 60 टैबलेट 500 रु एवं 120 टैबलेट 950 रु.। ■

गंगा

काँसोना टैब

(खाँसी एवं कफ नाशक)

खांसी साधारणतया प्रत्येक ऋतु परिवर्तन पर हर किसी को हो जाती है परन्तु इसको साधारण रोग समझकर अवहेलना करना शरीर के साथ अन्याय करना है। यह बिगड़कर अधिक दिन तक चलती रहे तो क्षय जैसे भयंकर रोग की जड़ भी बन जाती है। वैसे तो खांसी की अनेकों औषधियां चल पड़ी हैं। परन्तु हमने पूर्ण खोज करके ऐसा योग तैयार किया है जो सब प्रकार की खांसी पर परम उपयोगी सिद्ध हुआ हे। वास्तव में इससे बढ़कर औषधि खांसी के लिए आज तक आपको प्राप्त नहीं हुई होगी। खांसी नई पुरानी खुश्क तर कैसी भी क्यों न हो इसकी दो गोली मुख में पहुँचकर उसके विकारों को समाप्त करती हैं। ऐसी लाभकारी औषधि की एक शीशी प्रत्येक गृहस्थ के पास अवश्य ही होनी चाहिए।

मूल्य 60 टैबलेट 400 रु. व 120 टैबलेट 750 रु.। ■

गंगा

सिंह विजयपाक

(मूसली पाक, मूसली केशर एवं कौंचयुक्त)

हमारे आयुर्वेदिक ग्रन्थ जहां मनुष्यों को होने वाले अनेक प्रकार के रोगों की चिकित्सा बताते हैं वहां मनुष्य रोगी न हो इसके लिए आहार तथा विहार के महत्वपूर्ण नियम भी बताये गये हैं। जिनका पालन करने से मनुष्य पूर्ण स्वस्थ रहकर सौ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। उन्हीं नियमों में से एक नियम है बाजीकरण एवं रसायन औषधियों का सेवन करना इसी कार्य के लिए हम अनेक वर्षों से **''सिंह विजयपाक''** का सेवन करने के लिए निर्माण करते आ रहे हैं। यह पाक केवल औषधि ही नहीं है यह एक प्रकार का लाभकारी टॉनिक है, इसके सेवन से शरीर का रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि एवं शुक्र, मज्जा आदि सप्त धातुएं जिनसे मनुष्य शरीर बना है बढ़ती हैं एवं मजबूत होती हैं। इस प्रकार की औषधियाँ बाजीकरण हेतु श्रेष्ठ होती है। हमारे **सिंह विजयपाक** का सेवन मनुष्य की कायाकल्प कर देता है। शरीर की रचना में जिन–जिन पदार्थों की कमी होती है उसे पूरा करके मनुष्य को तरोताजा कर देता है। इस पाक में केसर, चन्द्रोदय, लोहभस्म, बंगभस्म, जायफल, जावित्री, पिस्ता, बादाम, कौंच आदि अनेक श्रेष्ठ एवं बहुमूल्य औाधियां डाली जाती हैं। अतः जीवन का आनन्द लेने के लिए पुरुषों से हमारा अनुरोध है कि इस अमृतमय औषधि का सेवन अवश्य करें। विवाहित स्त्री–पुरुषों के लिए अपने जीवन के आनन्द को स्थाई रखने के लिए इसका सेवन अवश्य करना चाहिए। यह पाक अत्यन्त स्वादिष्ट है लेकिन अविवाहित बच्चों को तथा गर्भिणी स्त्रियों को इसका सेवन नहीं करना चाहिए। इस औषधि के गुणों से हमारे ग्राहक बन्धु अच्छी तरह परिचित हैं। हमारे अधिकांश ग्राहक इसका सेवन प्रतिमाह करते हैं। इसके साथ हमारे **कामराज ऑयल** का प्रयोग करना अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ है।

मूल्य– 400 ग्राम 1400 रु. एवं 800 ग्राम 2700 रु.। ■

आवश्यक सूचनाः– यदि आपका पता किसी कारणवश बदल गया है तो कृपया अपने नये पते के बारे में हमें सूचना फोन पर एस.एम.एस के माध्यम से दे तथा फोन नं. अवश्य नोट करायें। जिससे हम आपकी सेवा ठीक प्रकार से कर सकें। *–धन्यवाद*

गंगा

गंगा कामराज कैप्सूल

(सत शिलाजीत युक्त)

क्या आप प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं? क्या आपके मुंह का रंग पीला पड़ता जा रहा हैं? क्या थोड़ी सीढ़ियां चढ़ते या जरा–सा दौड़ते ही आपका दम फूलने लगता है? क्या आप हर समय आराम से पड़े रहना चाहते हैं? क्या आप जब उठते हैं तब अपने आपको थका हुआ पाते हैं? क्या आपका दिल जोर से थड़कता है? क्या आपको अपनी पत्नी का संग कम अच्छा लगता है?

यदि इन सब प्रश्नों या इनमें से अधिकांश का उत्तर हां में आता है तो आप कमजोरी की ओर जा रहे हैं, आप अपने जीवन और यौवन को नष्ट कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में ध्यान देकर उचित चिकित्सा करनी चाहिए नहीं तो आपको बहुत पछताना पड़ेगा। बाद में बहुत अधिक चिकित्सा कराने व खर्च करने पर भी निराश होंगे इसके लिए अपूर्व औषधि हमारा कामराज कैप्सूल असाधारण गुणों के कारण सर्व साधारण में लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है, क्योंकि इसमें वे सभी बहुमूल्य औषधियाँ सम्मिलित हैं जो रसायन और बाजीकरण गुणों से युक्त हैं। इन द्रव्यों के संग्रह करने में हमें अधिक परिश्रम के साथ–साथ समय और धन व्यय करना पड़ता है फिर भी अपने विश्वस्थ ग्राहकों की मांग पूर्ण करने का प्रयास करते रहते हैं।

यह कैप्सूल वास्तव में नियम पूर्वक सेवन किया जाए तो शरीर को कामदेव के समान कान्तिमान और शक्तिशाली बनाने में समर्थ है। यह **गंगा कामराज कैप्सूल** शरीर की सम्पूर्ण धातुओं को बढ़ाकर वीर्य पुष्टि करता है। यह कैप्सूल शुक्र में रहे हुए दूषित घटकों का शोधन करता है उष्णता का शमनकर स्तम्भन शक्ति को बढ़ाता है तथा शुक्राशय की शुक्र वाहिनी के वात प्रकोप और शिथिलता को दूर करता है एवं इस कैप्सूल से प्रमेह, धातु दोष, मूत्र रोग, निर्बलता आदि विकार दूर होकर शक्ति की वृद्धि होती है। अतः इस औषधि की अत्यधिक मांग हमारे ग्राहकों को रहती है। आप भी एक बार प्रयोग करके देखें। 1 से 2 कैप्सूल, प्रातः काल एवं रात को दूध के साथ सेवन करें।

मूल्य– 60 कैप्सूल 500 रु. एवं 120 कैप्सूल 950 रु.।

■

विजयजीवन (हर्बल कैप्सूल)

स्तम्भक एवं उत्तम बाजीकर औषधि

मानव मात्र इस संसार में चार प्रकार के पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति हेतु तीन इच्छाओं को लेकर आता है, प्रथम इच्छा प्राणों को सुचारू रूपसे चलाते रहने की है यह तभी सम्भव है जब शरीर स्वस्थ एवं मन प्रसन्न रहे क्योंकि संसार के सभी कार्य स्वस्थ शरीर से ही होते हैं और इसी से मनुष्य परोपकार आदि कर्त्तव्यों को भी समुचित रूप से सम्पन्न कर सकता है। देवऋण, पितऋण से भी मुक्त होने के लिए स्वस्थ शरीर ही मूल कारण है। यदि आपका शरीर निर्बल हो गया है तो निःसंकोच हमें अपना विवरण लिख दीजिए या फोन पर बताएं या फिर यथाशीघ्र **विजय जीवन** का सेवन आरम्भ कीजिए, आप अनुभव करेंगे कि आपको नई शक्ति मिल रही है। निरन्तर सब प्रकार की चिकित्सा करने पर भी आपको अपने शरीर की खोई हुई शक्ति प्राप्त नहीं हो सकी हो तो निराश होने या चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं **विजय जीवन कैप्सूल** के सेवन से कमजोरी दूर होती है जो व्यक्ति जीवन से निराश हो चुके हैं। और लज्जा के कारण अपनी स्थिति को किसी के सामने प्रकट नहीं कर सकते वे व्यक्ति भी विजय जीवन का सेवन करके फिर से अपना गौरव प्राप्त कर सकते हैं। यह अपूर्व शक्तिदायक औषधि लाखों बार आजमाई जा चुकी है। इसके सेवन से नसों की कमजोरी, सुस्ती, नपुंसकता, पुरुषार्थहीनता हमेशा के लिए दूर होती है। इसके पहले ही कैप्सूल में भूख बढ़ जाती है। पुरुषों को विशेष कारणों से हुई निराशा एकदम उड़ जाती है तथा जहां लज्जा उठानी पड़ती थी वहां पूर्ण विजय प्राप्त होती है यह औषधि बहुत पौष्टिक तथा स्तम्भक है। उल्लेखनीय गुण यह है कि किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती। यथाशीघ्र दुर्बलता को दूर कर शक्ति और यौवन से परिपूर्ण करती है। इसके साथ सत शिलाजीत एवं मदनानंद पाउडर का सेवन करें।

विजय जीवन कैप्सूल मूल्य–60 कैप्सूल 500 रु. एवं 120 कैप्सूल 950 रु.।

■

गंगा

कामराज ऑयल

बालकपन में नासमझी के कारण अप्राकृतिक तथा अनियमित जीवन बिताने से पुरुषों के अंग विशेष में अधिक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। आकार का छोटा रह जाना, टेढ़ा हो जाना, नसों में पानी भर जाना, पूर्ण दृढ़ता का न आना आदि। विकारों के कारण जो कष्ठ उठाने पड़ते हैं। जिस प्रकार से लज्जित होना

पड़ता है, यह रोगी एवं चिकित्सक दोनों ही अच्छी तरह समझते हैं। यही नहीं सन्तान प्राप्ति के लिए भी ऊपर लिखे दोषों को दूर करना आवश्यक है। ऐसा ही आयुर्वेद शास्त्र में कहा गया है। इन लक्षणों को पैदा होते ही ध्यान देने की आवश्यकता है तथा शीघ्रातिशीघ्र उचित चिकित्सा प्रारम्भ कर देनी चाहिए। इसी की चिकित्सा के लिए यह आयुर्वेद रत्न "**कामराज ऑयल**" हमने तैयार किया है। **कामराज ऑयल** जो एक बार नहीं हजारों बार आजमाया जा चुका है। यह जल्दी अपना असर दिखाता है यह आयुर्वेदिक औषधि न छाले डालती है न जलन करती है। सौम्य औषधि है। चिकित्सक अपने रोगियों पर प्रयोग कर यश के भागी बनें। **सत शिलाजीत**, **कामराज कैप्सूल**, **सिंह विजयपाक** के साथ इसे प्रयोग करने से लाभ होता।

पैकिंगः कामराज ऑयल 30 मिली. 400 रु. एवं 30 मिली. × 3 = 1100 रु.। ■

गंगा मकरध्वज कैप्सूल (केशर, मकरध्वज युक्त)

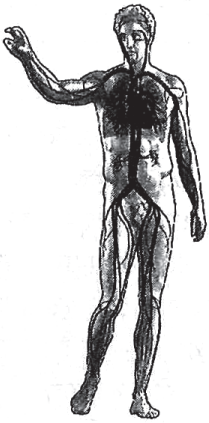

इसके सेवन करने के तत्काल बाद ही शरीर में रूधिर–प्रवाह तीव्र होकर वात–नाड़ी संस्थान पुष्ट होता है और शरीर की सारी कमजोरी दूर होकर पूरे वर्ष–भर के लिए नवीन चैतन्यता प्राप्त होती है जो व्यक्ति निर्बलता एवं रोगादि से पीड़ित नहीं है, वह भी यदि **मकरध्वज कैप्सूल** लेते हैं तो उन्हें बहुत सुख प्राप्त होता है। वे हर समय बलवान बने रहते हैं। शीत में डूबे हुए एवं मूर्छित रोगियों को इसकी सिर्फ एक मात्रा से ही बड़ा लाभ होता है। भयानक ज्वर, अतिसार, विषमज्वर, जीर्णज्वर, प्रबलक्षय, श्वास, सन्निपात आदि रोगों में यह अमृत समान गुण दिखाता है। यह कैप्सूल स्नायुओं को उत्तेजित नहीं करता बल्कि उन्हें मजबूत बनाता हैं। शरीर को पुष्टि देता है और बल तथा आयु की वृद्धि करती है। शरीर में **मकरध्वज कैप्सूल** का विशेष प्रभाव वातनाड़ी संस्थान और रक्तवह संस्थान पर होता है। यह हृदय के लिए बल्य है, इसके सेवन से मनुष्य कामदेव के समान कान्तिमान और बलशाली हो सकता है निचोड़ यह है कि विविध औषधियों से निराश हुए एवं अधिक आयु होने के कारण थके हुए तथा तीव्र औषधि की इच्छा वाले व्यक्तियों के लिए यही वस्तु है जिसकी वह इच्छा करते रहे हैं। अतः समस्त विकारों का नाश करने वाली इस **मकरध्वज कैप्सूल** का सेवन एक बार अवश्य करें।

(30 दिन का कोर्स) 60 कैप्सूल की एक बॉटल। मूल्य– 1000 रु.। ■

गंगा

मदनानंद पाउडर

(धातुपौष्टिक, स्वप्नदोष नाशक वीर्यवर्धक चूर्ण)

यह चूर्ण बल, बुद्धि के लिए अत्यन्त उत्तम है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। यह चूर्ण अनेक गुणकारी औषधियों के योग से बनाया जाता है। उपरोक्त औषधियाँ बल, बुद्धि और पुष्टता के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ है। इस अमृतमय चूर्ण के सेवन करने से केवल बल, बुद्धि ही नहीं, बल्कि अनियमित जीवन बिताने के कारण से हुए पुरुष रोग भी समूल नष्ट होते हैं। स्वप्न रोग के लिए तो यह अद्वितीय औषधि है निरंतर जिनको स्वप्नदोष होते रहते हैं, जिससे शरीर भी अव्यवस्थित हो जाता है, किसी कार्यादि में मन नहीं लगता, पड़ा रहने को जी चाहता है, ऐसे मनुष्य के लिये वह रामबाण औषधि है। आजकल के नवयुवक गन्दी संगत के कारण बुरे व्यसन हस्थमैथुन आदि में फँस जाते हैं जिससे अनेक गुप्त रोगों की उत्पत्ति होती हे। ऐसे नवयुवकों के लिए यह आयुर्वेद की महान औषधि अमृततुल्य है। इस औषधि के गुणों का वर्णन हम संकेत में ही कर सकते हैं, लेकिन हम समझते हैं कि विज्ञवैद्य एवं पाठक इतने से ही इस औषधि के गुण धर्म भली प्रकार जान गए होंगे। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यह चूर्ण रस, रक्तादि धातुओं को बढ़ाता हुआ असंयमंजनित रोगों को दूर करता है। इसके साथ में **सत शिलाजीत** एवं **मदनानंद कैप्सूल** भी ले। **'बॉडी बिल्डर'** व पहलवान भाईयों के लिए उत्तम बॉडी सप्लिमेंट।

मूल्य–400 ग्राम 1400 रु. एवं 800 ग्राम 2700 रु.। ■

सैक्सोमैक्स कैप्सूल
(सत शिलाजीत युक्त)

आइये महाशय जिस उत्तम बाजीकरण औषधि को आजकल शौकीन ग्राहक जगह–जगह ढूंढ़ते हैं वह अत्यधिक अनुसंधान के बाद हमने तैयार की है जैसा भी निर्बल पुरुष हो मदमस्त होकर आनन्द से विहार कर सकता है रति क्रीड़ा के सुख के लिए ऐसी अमूल्य और शीघ्र लाभ पहुँचाने वाली औषधि मिलनी असम्भव है।

यह कैप्सूल युगल जोड़ियों के लिए आनन्द का खजाना है इस कैप्सूल के सेवन से सर्वांग शिथिल मनुष्य भी हष्ट–पुष्ट एवं बलिष्ठ होकर बुढ़ापे में नई जवानी का आनन्द पाता है। हमारी परीक्षित और अव्यर्थ सैक्सोमैक्स कैप्सूल सेवन करते ही स्वप्न में तथा पेशाब के रास्ते से वीर्य जाना बन्द हो जाता है, धातु का पानी के समान पतला हो जाना, जल्दी–जल्दी पेशाब होना, संभोग की इच्छा न होना, या होते ही वीर्य का निकल जाना, आँखों के आगे अन्धेरा छा जाना, इन्द्रियों का शिथिल पड़ जाना, किसी काम में चित्त न लगना, कमर का दर्द, सिर का दर्द, सोलहों प्रकार के कष्ट साध्य प्रमेह द्वारा उत्पन्न होने वाली व्याधियाँ अतिशीघ्र नष्ट होती है। यदि हमेशा इसका सेवन किया जाए तो स्त्री प्रसंग करने में जो शारीरिक निर्बलता आ जाती है, और वीर्य की जो हानि होती है उससे ये रक्षा करती है, सैक्सोमैक्स कैप्सूल के सेवन से पुराना वीर्य विकार दूर होकर नया वीर्य पैदा होता है, स्तंम्भन शक्ति व चैतन्यता बढ़ती है, किसी भी कारण उत्पन्न हुई नपुंसकता दूर हो जाती है इसके साथ–साथ कामराज ऑयल तथा सत शिलाजीत का भी प्रयोग किया जाए तो अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

1–2 कैप्सूल प्रातः एवं रात्रि दूध के साथ सेवन करें।

मूल्य–60 कैप्सूल 600 रु. एवं 120 कैप्सूल 1150 रु.।

■

धैर्य और विवेक

जो सफलता और सम्पदा पाकर इतराते नहीं, संकट और विपत्ति में घबराते नहीं, जो किसी की मजबूरी से फायदा नहीं उठाते, जो दूसरे के दुःख को अपने दुःख जैसा ही समझते हैं जो परोपकार के लिए सदैव तत्पर रहते हैं और सेवा करके भी धन्यवाद देते हैं, जो धैर्य और विवेक कभी नहीं छोड़ते ऐसे जीवात्माओं का मनुष्य योनि में जन्म लेना सफल हो जाता है।

स्त्री जन्य रोगों की औषधियाँ

ल्यूकोरारी कैप्सूल

रक्त प्रदर एवं श्वेत प्रदर, ल्यूकोरिया की अचूक औषधि

यह रोग स्त्री को ही होता है। इसमें योनि मार्ग से पीला सफेद या लाल रंग का गंदा पानी बहता है। इस पानी के बहने से स्त्री का शरीर कमजोर होकर पीला पड़ जाता है, उठते–बैठते चक्कर आते हैं, कमर में दर्द रहता है, खून कम हो जाता है। इस रोग से पीड़ित स्त्री सन्तान सुख से भी वंचित रहती है। यहां तक कि रोग बढ़कर टी.बी. में बदल जाता है। इस रोग के मुख्य कारण अति मैथुन, कमजोरी, चिन्ता तथा बहुत गर्म खान पान है। यह इसे इस प्रदर यानि (ल्यूकोरिया) को मिटाने के लिए यह लाभकारी औषधि हे। साथ में **ल्यूकोरेक्स कैप्सूल** एवं **गौरीचूर्ण** का सेवन करायें। **सेवन विधि**– 1–2 कैप्सूल दिन में दो बार दूध से लें। **पैकिंगः ल्यूकोरारी कैप्सूल, मुल्य–60 कैप्सूल 500 रु. एवं 120 कैप्सूल 950 रु.।** ■

ल्यूकोरेक्स कैप्सूल

मासिक धर्म को नियमित करने एवं रक्त प्रदर की प्रमाणित औषधि

जब हमारी ल्यूकोरेक्स कैप्सूल का जिक्र आयुर्वेद विमर्श द्वारा हमारे कृपालु ग्राहकों के पास पहुँचेगा तो उन्हें विदित होगा कि हमने कुछ नवीन अनुभूत योगों का भी समावेश कर दिया है **ल्यूकोरेक्सकैप्सूल** के नाम से नवीन अनुभूत लाभकारी योग बनाया गया है। नये नाम के अनुसार गुण भी हों यही प्रयत्न किया गया है। यह योग स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धी सभी रोगों पर लाभदायक सिद्ध होगा, यह हमारा विश्वास है। जो लोग सन्तति विहीन है तथा इस कार्य में बाधा रूपी जो विकार है वह इस योग का 30 दिन तक निरन्तर सेवन करें तो स्त्रीगर्भ धारण करने में सहायक होगी। आयुर्वेद का एक प्रचलित योग है। यह स्त्री–पुरुष दोनों को हितकारी है। अत्यन्त वाजीकर और पुष्टिदायक है यह जहां स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के योनिगत रोगों का नाश कर देता है, वहीं स्त्री–पुरुष दोनों के बन्ध्यत्व दोषों का निवारण भी कर देता है और उन्हें संतानोत्पत्ति योग्य बना देता है। यह गर्भाशय को ताकत देता है तथा योनि को संकुचित कर प्रोढ़ा स्त्री को भी युवती सदृश्य बनाने में सहायक है। बहुत सी महिलाएं जो अपने खराब स्वास्थ्य से परेशान रहती हैं, गर्भाशय में होने वाले रोगों में जैसे रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर आदि के कारण कमरदर्द, शिरशूल, हड़िडयों में टूटने की–सी वेदना

तथा हाथ पैरों की जलन, कमर दर्द में स्त्रियों के लिए ल्यूकोरेक्स कैप्सूल अत्यन्त लाभकारी औषधि है। इसके कुछ दिन निरन्तर सेवन से गर्भाशय गर्भ धारण करने योग्य बन जाता है। स्त्रियों के समस्त रज सम्बन्धी विकारों की सफल औषधि है। यह पुरुषों के लिए भी उतना ही लाभदायक है। साथ में ल्यूकोरारी कैप्सूल एवं सत शिलाजीत लें। नष्टार्तव कष्टार्तव एवं अनियमित मासिक धर्म को 30 दिन में नियमित करता है। 1–1 कैप्सूल दिन में दो बार दूध से एवं ल्यूकरारी कैप्सूल 1–1 कैप्सूल।

पैकिंगः ल्यूकोरैक्स कैप्सूल मूल्य–60 कैप्सूल 500 रु. एवं 120 कैप्सूल 950 रु.।

गौरी चूर्ण

(प्रदर रोगों पर रामबाण)

इसके सेवन से स्त्रियों में श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर नष्ट होता है दुर्बल रोगिणी स्त्रियों को यह चूर्ण स्वस्थ बना देता है। इससे प्रदर रोग से उत्पन्न हुई शिकायतें जैसे कमर या पेडू में दर्द होना हाथ पैरों के तलुओं तथा आँखों में जलन होना, मन्द–2 ज्वर होना, भूख नहीं लगना आदि समस्त विकार नष्ट होते हैं एवं गर्भाशय सबल होकर गर्भधारण योग्य बन जाता है। पुरुषों के लिये प्रमेह एवं स्त्रियों में प्रदर दोनों ही खतरनाक व्याधियाँ है। ये दोनों रोग जवानी में ही बुढ़ापा ला देते हैं जीवित रहते हुए स्त्री एवं पुरुष मुर्दा (निर्जीव) बन जाते हैं। अगर उपरोक्त लक्षण आपमें हैं तो आज ही गौरी चूर्ण मंगाये तथा **ल्यूकोरारी कैप्सूल** के साथ सेवन करें–1–1 **कैप्सूल ल्यूकोरेक्स** कैप तथा एक–एक चम्मच **गौरी चूर्ण** दिन में दो बार दूध के साथ 30 दिन सेवर करें।

300 ग्राम (30 दिन हेतु) रु. 850/–। ■

सैक्स रोग और उनकी चिकित्सा...

डॉ. एन. के. सिंघल, (यौन रोग विशेषज्ञ)

"यौवन"

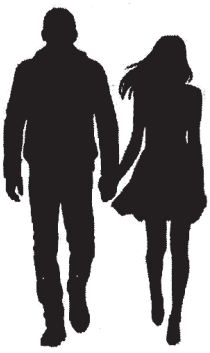

यह मनुष्य के जीवन का वह नाजुक भाग है जिसको बहुत कम लोग ही समझते हैं। इस समय शरीर के अंग–अंग में जोश होता है। यदि इस काल में नवयुवक अपनी इच्छाओं को अपने वश में रखता है और संयम से रहता हैं तो उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन अच्छा होता जाता है और वह एक स्वस्थ, आकर्षक नवयुवक बन जाता हैं। तथा उन्नति के मार्ग पर ऐसे युवक निरन्तर बढ़ते ही चले जाते हैं। लेकिन दुःख की बात यह है कि अज्ञानतावश प्रायः इस उम्र में नवयुवक बुरी संगत के कारण कई प्रकार के बुरे कार्य करने लगते हैं और अपने जीवन को नष्ट कर बैठते हैं। अपने इन बुरे कामों के परिणाम का उन्हें उस समय पता नहीं चलता लेकिन विवाह के पश्चात् जब वह उसके वास्तविक आनन्द को प्राप्त नहीं कर पाते और वैवाहिक जीवन में अपने आपको पूर्णतः, असफल पाते हैं तो पछताते हैं और महसूस करते हैं कि जिस अमूल्य रत्न वीर्य को उन्होंने अपनी चढ़ती जवानी के जोश में आकर नष्ट कर दिया, उसका क्या मूल्य है। वह इसे पढ़कर कुसंगति को छोड़ दे ताकि उनका भविष्य व वैवाहित जीवन अत्यन्त आनन्दमय बन सके।

स्वप्नदोष (Night Discharge)

कारण व चिकित्सा

कारणः– रात को सोते समय वीर्य के स्खलित हो जाने को स्वप्नदोष कहा जाता है। पुरुषों में स्वप्नदोष 14–15 वर्ष की आयु से होने लगता है। ये एक सामान्य शारीरिक क्रिया है जिसमें वीर्य से भरे शुक्राशय को शरीर खाली कर देता है ताकि नवीन और ताजा वीर्य उसकी जगह आकर भर जाये वीर्य निकासी की यह क्रिया स्वप्न में ही स्त्री के साथ रति क्रिया करने पर पुरुष का वीर्य निकल जाता है कई बार बिना स्वप्न के ही वीर्य निकल जाता है सुबह जब पुरुष सोकर उठता है तो उसे पताचलता है। स्वप्नदोष की अवधि भिन्न–2 पुरुषों में भिन्न–भिन्न होती है कई व्यक्तियों को किसी सप्ताह

में 2—3 बार हो जाता है कभी महीने में या डेढ़ महीने तक भी नहीं होता। स्वप्नदोष को कब रोग माना जाए और कब सामान्य शारीरिक क्रिया समझा जाए महीने में स्वस्थ पुरुष को अगर एक बार स्वप्न दोष हो जाए तो सामान्य है अगर ज्यादा है तो उसका इलाज करना चाहिए अन्यथा पुरुष की स्तम्भक शक्ति क्षीण होने लगती है। स्वप्नदोष रोग बन गया है इसके सामान्य लक्षण हैं जिस दिन स्वप्नदोष होता है उसके अगले दिन शरीर थका—थका रहता है और कमजोरी महसूस होती है चेहरा बुझाबुझा रहता है मानसिक अस्वस्थता रहती है। सिर और कमर में विशेष रूप से दर्द होता है आंखों के आगे उठते—बैठते अंधेरा आता है तथा गालों में गड्ढे पड़ने लगते हैं। प्रत्येक रोगी को यह समझना चाहिए कि वीर्य ही जीवन है।

स्वप्नदोष की चिकित्साः–

गंगा मदनानंद कोर्स

स्वप्नदोष की चिकित्सा में सबसे पहले हमें आहार पर ध्यान देना चाहिए। तले हुए पदार्थ खटाई, गुड़, तेल, लाल मिर्च और अधिक चटपटा भोजना सर्वथा वर्जित हैं। अश्लील साहित्य से बचें रात्रि में सोने से पहले पेशाब अवश्य करें। इसमें, **सत शिलाजीत**, **मदनानंदवटी**, **मदनानंद चूर्ण**, **कामराज तेल**, **अग्निवर्धक चूर्ण 30 दिन का कोर्स**। इसे आज से ही मंगाकर सेवन करें। **कोर्स मूल्य 2000 रु. डाकखर्च सहित।** ■

सैक्सोमैक्स कैप्सूल

(सत शिलाजीत युक्त)

यह कैप्सूल युगल जोड़ियों के लिए आनन्द का खजाना है

मूल्य—60 कैप्सूल 600 रु. एवं 120 कैप्सूल 1150 रु. ।

निर्माताः **श्री गंगा डिपो, हरिद्वार**

प्रमेह या धातु क्षीणता (Spermatorrhoea)

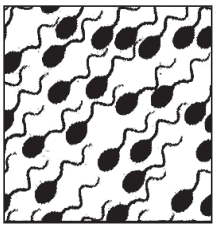

किशोरों में और युवकों में यह शिकायत अत्यधिक पायी जाती है मलमूत्र त्याग के समय वीर्य मूत्र के साथ निकलने लगता है इसे प्रमेह या धातु कहते हैं शुरू–शुरू में तो वीर्य तभी निकलता है जब मल के लिए जोर लगाते हैं फिर धीरे–धीरे मूत्र के साथ एवं मल के साथ स्वतः जाने लगता है जब रोग बढ़ जाता है, तो वीर्य इतना पतला हो जाता है कि मूत्र के साथ निकलने पर इसका पता भी नहीं चलता। पौष्टिक भोजन के उपरान्त भी रोगी दिन प्रतिदिन कमजोर होता चला जाता है धीरे–धीरे अपना यौवन खो बैठता है ऐसे पुरुष स्त्री को संतुष्ट नहीं कर सकते उत्तेजना नहीं होती है। यदि संभोग करें तो इन्द्री ढीली पड़ जाती है। ऐसे पुरुष में स्त्री विमुख हो जाती है। यह समझती है पति नपुंसक हो गया है उसे विलास का शौक अवश्य रहता है वह धीरे–धीरे नपुंसकता की ओर अग्रसर रहता है। ऐसे रोगी को 30 दिन का **सिंह विजय गोल्ड** कोर्स सेवन करायें (धातु क्षीणता कोर्स)। **कोर्स मूल्य 2500 रु. डाकखर्च सहित।** ■

शीघ्रपतन (Premature Ejaculation)

योनि में शिश्न प्रविष्ट करने के बाद कुछ ही सैकन्डों में वीर्य स्खलित हो जाए तो इसे शीघ्रपतन कहते हैं सभी लोग जानते हैं कि वीर्य निकल जाने पर शिश्न की उत्तेजना नष्ट हो जाती है। सब मनुष्यों की मैथुन शक्ति एक समान नहीं होती कोई मनुष्य एक मिनट ठहर सकता है कोई बीस मिनट तक किन्तु यदि पुरुष का वीर्य स्त्री को पूर्ण सन्तुष्ट किए बिना निकल जाता है तो वह निःसन्देह शीघ्रपतन का रोगी कहा जाता है। इसके कई कारण है जैसे सहवास शुरू करते ही वीर्य का निकल जाना स्त्री के पास जाते ही इन्द्री में गुदगुदी होना और उसी समय वीर्यपात हो जाना गुप्तांग के स्पर्श मात्र से ही वीर्य पात हो जाना भीड़–भाड़ वाली जगह किसी स्त्री से छू जाने पर वीर्य का निकलना ये सब शीघ्रपतन की हालत हैं और ये अन्त में नपुंसकता की ओर ले जाती हैं। इस रोग में रोगी को अफीम इत्यादि नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि थोड़ी देर तो अवश्य लाभ दिखाती है फिर आजन्म मनुष्य इसका आदी हो जाता है। फिर नपुंसकता की ओर अग्रसर होता जाता है इसके लिए निम्न कोर्स है। 30 दिन का **कामराज स्पेशल कोर्स** (खाने व लगाने के कैप्सूल पाउडर, तैल कोर्स)।

कोर्स मूल्य 2000 रु. डाकखर्च सहित। ■

क्यों मर्द होता है शर्मिंदा?

(नपुंसकता) (Impotency)

डॉ. एन.के. सिंघल
(मुख्य चिकित्सक)– श्री गंगा डिपो क्लीनिक

यदि कोई मनुष्य मैथुन क्रिया में स्त्री को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट न कर सके तो उसे नपुंसकता कहते हैं इसमें भी कई प्रकार की नपुंसकता होती है जैसे स्तम्भन शक्ति का पूर्ण देर तक न होना, संभोग के समय स्त्री को संतुष्ट किए बिना ही वीर्यपात हो जाना, तथा अन्त में उत्तेजना का बिल्कुल न होना यह सब दशाएं नपुंसकता की है। नपुंसकता का कारण अत्यधिक हस्तमैथुन करना है। इस दशा में संभोग की इच्छा होते हुए भी पुरुष के लिंग में उत्तेजना नहीं होती और वह बेजान मांस की तरह गिरा रहता है। कामेच्छा होते हुए भी इन्द्री में तनाव नहीं आता और यदि पुरुष भरसक प्रयत्न करें और थोड़ी उत्तेजना लिंग में आ जाए तो वीर्यपात शीघ्र हो जाता है इस रोग में मनुष्य का वैवाहित जीवन बिल्कुल नष्ट हो जाता है। रोगी कुण्ठाग्रस्त हो जाता है तथा उसे चारों और अन्धकार दिखाई देने लगता है। कई बार रोगी इतना निराश हो जाता है कि अपनी जीवनलीला समाप्त करने की सोचने लगता है। नपुंसकता का प्रभाव पुरुषपर तो पड़ता ही है किन्तु वो स्त्री भी मानसिक रूप से असंतुलित हो जाती है स्त्री तो अपना सब कुछ अपने पति को अर्पण कर देती है। लेकिन जब उसे ये अहसास होता है कि उसका पति उसको संतुष्ट नहीं कर पा रहा है तो उसकी स्थिति का अन्दाजाबड़ी आसानी से लगाया जा सकता है। कामवासना की पूर्ति एवं संतान की लालसा से विवश होकर स्त्री पर पुरुष का सहारा भी ले सकती है जिससे कुल की मर्यादा का नाश होता ही है। एक अच्छा खासा परिवार अपनी मूर्खता से नरक बन जाता है। अगर आप भी इस रोग से पीड़ित हैं तो घबराने की कोई बात नहीं है दुनिया में ऐसा कोई रोग नहीं है जो कि हमारी आयुर्वेदिक दवाओं के सेवन से ठीक न हो। इन औषधियों को आयुर्वेद के विद्वानों ने 5000 वर्ष पूर्व पहचान लिया था उपरोक्त रोगों से बचने के लिए निम्न कोर्स का आप सेवन करें। आप डॉ. साहब से फोन पर सम्पर्क कर सकते हैं। **इलाजः कामराज स्पेशल कोर्स। 2000 रु.।**

कृपया ध्यान दें– स्वप्नदोष, प्रमेह, शीघ्रपतन नपुंसकता आदि रोग कोई हौआ नहीं होते ये भी आम रोगों की तरह ही हैं घबराना नहीं बल्कि धैर्य से काम लेना चाहिए। रोग का ठीक इलाज करने एवं शीघ्र रोग ठीक होने के तीन लक्षण हैं (1) रोग का अनुभवी चिकित्सक द्वारा सही निदान (2) शुद्ध एवं प्रमाणित औषधियों की प्राप्ति (3) औषधि प्रयोग करने पर पथ्य अपथ्य का ध्यान एवं विश्वासपूर्वक व धैयपूर्वक औषधि का सेवन कराना। ■

स्त्रियों में प्रदर रोग और उसकी चिकित्सा

आजकल ज्यादातर स्त्रियाँ प्रदर रोग से पीड़ित हैं प्रदर रोग में स्त्रियों की योनि से सफेद या लाल रंग का लेसदार स्राव निकलता रहता है यह रोग दो प्रकार का होता है एक श्वेत प्रदर, दूसरा रक्त प्रदर श्वेत प्रदर में स्त्रियों की योनि से श्वेत स्राव तथा रक्तप्रदर में रक्त स्राव बहता है।

आजकल बहुतायत महिलायें श्वेतप्रदर रोग से ग्रसित हो रही हैं। ये बीमारी महिलाओं की खासी परेशानी का कारण बन रहीं है अधिकतर महिलायें शर्म के मारे इस रोग को छुपाये रहती हैं और कुछ लापरवाही की वजह से दवा नहीं लेती हैं कुछ दवा तो लेती हैं किंतु नियमित दवा का सेवन नहीं करती हैं। इस बीमारी को ल्यूकोरिया के नाम से भी पुकारा जाता है। मासिक धर्म निवृति के पश्चात् भी योनि से श्वेत लेसदार चिपचिपा स्राव निकलने को ही श्वेत प्रदर कहते हैं। इसे पानी की शिकायत होना भी कहते हैं। कमर दर्द, पैरों में दर्द, जकड़न, खिंचाव, झनझनाहट, हाथ पैरों में चिटियों जैसा काटना, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, संभोग की अनिच्छा एवं शीररिक दुर्बलता इस रोग के मुख्य लक्षण हैं। आधुनिक शैली की फैशनेबल, विलासी आहार विहार वाली, आलसी, मेहनत के कार्य न करने वाली, मानसिक दबाव में रहने वाली, योनि की नियमित सफाई न करने वाली स्त्रियों में यह रोग अधिक होता है।

इस रोग में संभोग, तला भोजन, मिर्च, मसाले, खटाई एवं गरिष्ठ पदार्थों का सर्वथा त्याग करना चाहिए। दूध, चावल, चावल का धोवन, चावल की खीर, केले की खीर, मखाने की खीर, मीठा दलिया, गोंद के लड्डू, सेब, सेब का मुरब्बा आदि प्रयोग करना चाहिए।

प्रदर रोग में हरी सब्जियां, फल एवं अंकुरित भोजन को ग्रहण करना चाहिये अगर उपरोक्त भोजन नियमित सेवन करें तो दवा के साथ–साथ शीघ्र लाभ होने की स्थिति बनती है। ज्यादातर महिलायें अपने स्वास्थ्य के प्रति अति उदासीन देखी गयी हैं। बचाखुचा भोजना खाना, भोजन बनाने में आलस्य, अगर पति दो तीन दिन घर से बाहर है तो भोजन बनाना ही नहीं एवं बासी भोजन खाना भी इस बीमारी का मुख्य कारण होता है। स्त्रियों पर आमतौर पर अत्यधिक घर के कार्यों का दबाव रहता है। इसलिये स्त्रियों को पौष्टिक भोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिये। फलों का रस भी लिया जा सकता है। ■

स्त्री रोगों पर ल्यूकोरेक्स गोल्ड कोर्स

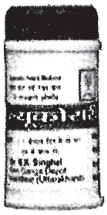

जिस प्रकार पुरुषों को शरीर स्वस्थ रखने की लिए सर्दियों में श्रेष्ठ टॉनिक सेवन करना चाहिए। देखा जाए तो आज के युग में स्त्रियों को भी टॉनिक की विशेष आवश्यकता रहती है। एक तो सारे दिन उन्हें गृहस्थी के काम–काज में बहुत परिश्रम करना होता है उपर से संतान का भी भार संभालना पड़ता है, परिणाम स्वरूप उन्हें स्वस्थ रहने के लिए अतिरिक्त शक्ति की जरूरत होती है। यदि ऐसा न हो तो सबसे पहले उनके बदन में दर्द रहना, कमर टूटती रहना, आंखों के आगे अंधेरा आना, सिर फटा–सा जाना, हाथ–पांवों में दर्द रहना जलन रहना आरम्भ हो जाता है। इसके बाद खून की भी कमी मालूम पड़ने लगती है। और काम–काज में मन नहीं लगता, ऐसी स्थिति में यदि ध्यान न दियाजाए तो फिर यही बातें आगे जाकर असाध्य रोगों का कारण बनती हैं। स्त्रियों के लगभग सभी गुप्त रोगों पर **ल्यूकोरेक्स गोल्ड कोर्स** अच्छा असर दिखाता है। विधिपूर्वक कम से कम 30 दिन के सेवन करने से स्त्रियों के समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। ध्यान रहे दुर्बल शरीर से दुर्बल संतान का होना स्वाभाविक है। अतः हष्ट–पुष्ट सन्तान की प्राप्ति के लिए घर गृहस्थी वाली स्त्रियों को यह उत्तम कोर्स अवश्य सेवन करना चाहिए।

ल्यूकोरेक्स गोल्ड कोर्स– मूत्राशय से सम्बन्ध रखने वाले सभी अवयवों पर अच्छा कार्य करता है, साथ ही गर्भाशय के अवयव पर भी इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः ''रक्त–प्रदर, श्वेत–प्रदर, अत्यार्तव, नष्टार्तव'' आदि स्त्रियों के अनेकों रोगों के लिए हमारा **ल्यूकोरेक्स गोल्ड कोर्स** लाभकारी है दो मास सेवन करने के पश्चात् उपरोक्त सभी रोग ठीक होते हैं। प्रसव के पश्चात् धातुएं क्षीण हो जाती है। जिसमें सम्पूर्ण शरीर में दर्द रहता है काम करने की इच्छा नहीं होती, ऐसी स्थिति में इसका सेवन करना अत्यन्त उपयोगी है। वायु के कारण होने वाले रोगों व दर्दों में स्त्रियों के लिए उत्तम है।

ल्यूकोरेक्स गोल्ड कोर्स एक माह (कैप्सूल+टैबलेट+चूर्ण) कोर्स मूल्य 2000 रु. डाकखर्च सहित। ■

बवासीर और उसकी चिकित्सा

बवासीर मुख्य रूप से कब्ज के कारण होती है किन्तु प्रायः ये देखा गया है कि कब्ज को व्यक्ति बहुत सहज में ले लेते हैं जिसके कारण वह बवासीर का शिकार हो जाते हैं और ऑप्रेशन तक की नौबत आ जाती है। बहुत दुबले पतले आदमी को भी अक्सर बवासीर ग्रस्त देखा गया है। कभी किसी बिमारी के कारण अधिक कमजोर हो जाने के कारण भी बवासीर हो जाती है। अंसयमित जीवन जीने अधिक मदिरा पान करने, तले हुए अधिक मिर्च मसाले वाले पदार्थों को ग्रहण करने से भी बवासीर ग्रस्त हो जाते हैं।

नसों के फूल जाने की अवस्था, नसों के टेड़ी मेड़ी हो जाने की अवस्था, कमजारे हो जाने की अवस्था को भी बवासीर कहते हैं। यह किसी भी उम्र में हो जाती है एवं किसी भी मौसम में हो जाती है। प्रायः यह देखा गया है गर्मी के मौसम में अधिक बढ़ जाती है जब बवासीर पुरानी हो जाती है तो रोगी को मल के साथ रक्त की बूंदे निकलने लगती है। कई बार शौच करते समय दर्द के साथ खून गिरने लगता है। निरन्तर खून गिरने से रोगी में खून की कमी हो जाती हे। खून की कमी होने से शरीर में रोग संक्रमण का खतरा अत्याधिक बढ़ जाता है। कमोड वाली सीट पर तो रक्त गिरने का रोगी को पता भी नहीं चलता है। घरलू महिलाओं में भी बवासीर अधिक होती है क्योंकि महिलायें काम के अत्यधिक बोझ के कारण अनियमित शौच की आदत का शिकार हो जाती हैं। जिस कारण वह बवासीर को आमन्त्रण दे बैठती हैं। बवासीर दो प्रकार की होती है खूनी बवासीर व बादी बवासीर, बादी बवासीर सूखी होती है तथा खूनी बवासीर में मल त्याग के वक्त खून गिरता है पहले तो बादी बवासीर होती है किन्तु धीरे–धीरे यही खूनी बवासीर में बदल जाती है।

बवासीर की निम्न अवस्थाएं होती हैं–

(1) बवासीर होने का अहसास होते ही रोगी को उचित खान पान आहार विहार तथा परहेज करके प्रथम अवस्था पर काबू पाया जा सकता है।

(2) मल के वेग को न रोंके पानी खूब पियें अग्निवर्धक चूर्ण का सेवन करें। हरी सब्जियाँ, अमरूद, पपीता, केला आदि खाकर दूसरी अवस्था पर काबू पाया जा सकता है।

(3) किन्तु तीसरी अवस्था बवासीर हो जाने पर धैर्य पूर्वक **पाईलैक्सो स्पेशल कोर्स** करें। इसमें पाईलैक्सो कैप्सूल+ऑयल+चूर्ण 30 दिन का एक कोर्स। **कोर्स मूल्य 2000 रु. डाकखर्च सहित।** ■

आर्थोजिन गोल्ड कोर्स

जोड़ो का दर्द (गाउट, आर्थराइटिस) (डॉ एन.के. सिंघल)

क्या आपको जोड़ों का दर्द या (गाउट) हो गया है आम भाषा में लोग इस शब्द का प्रयोग करते हैं, वस्तुतः जोड़ों के दर्द के अन्य बहुत कारण है– गठिया, आर्थराइटिस, आस्टियो आर्थराइटिस, रुमेटाईड, किन्तु गठिया जोड़ो के दर्द का एक अलग रोग है। काफी हद तक गाउट वंशानुगत रोग है गाउट यूरिन के सिस्टम के असामान्य होने के कारण होता है जिससे शरीर में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है तथा सोडियम के कण जोड़ों के चारों तरफ एवं गुर्दे के अन्दर एकत्र हो जाते हैं जिससे मरीज के जोड़ों में सूजन आ जाती है और दर्द होता है और शरीर के अन्य जोड़ों में गांठे हो जाती हैं इससे गुर्दे खराब होने का खतरा भी बढ़ जाता है। आयुर्वेदिक वैज्ञानिकों का कहना है कि यह रोग शरीर की कई विकृतियों के एक साथ असामान्य होने पर उत्पन्न होता है। विदेशों में ये रोग अधिक पाया जाता है। भारतवर्ष में भी गाउट के मरीजों की अच्छी खासी संख्या है।

यदि वंशानुगत गाउट का इतिहास है या ज्यादा शराब का सेवन करते हैं, अधिक प्रोटीन का सेवन करते हैं, मोटापा, ब्लड क्लोरोस्टोल की अधिकता, उच्चरक्त चाप से रोग की संभावना बढ़ जाती है पेन किलर का अत्यधिक सेवन करने से गाउट होने का डर रहता है पुरुषों में 6–8 मि. ग्राम एवं महिलाओं में 4–6 मि. ग्राम प्रति 100 मि.ली. से अधिक यूरिक एसिड की मात्रा रहती है, तो सावधान हो जाईये आप गाउट के शिकार हो गये हैं या होने जा रहे हैं। गाउट रोग के 70 प्रतिशत मरीज पुरुष होते हैं ये रोग 25 वर्ष की उम्र के बाद अधिक होता है ये रोग अचानक ही पकड़ लेता है, पहले बुखार रहता हैं धीरे–धीरे जोड़ों में सूजन एवं दर्द रहने लगता है। अधिकतर लोगों में दर्द पैरों के जोड़ों एवं उंगलियों में प्रारम्भ होता हे। अत्यधिक शराब सेवन प्रोटीन युक्त आहार, ब्लडप्रेशर, टेंशन से रोग की तीव्रता बढ़ जाती है इससे शरीर के जोड़ों में दर्द एवं सूजन बढ़ जाती है। गाउट के मरीज को भोजन में प्रोटीन की मात्रा कम लेनी चाहिये मीट, मछली, अंडे, मुर्गे का सेवन नहीं करना चाहिए। शराब का सेवन सर्वथा वर्जित है। भोजन में वसा का प्रयोग कम करें। अगर वजन ज्यादा हो तो वजन कम करें यदि बार–बार बीमार होते हैं तो चिकित्सा नियमित करवायें। आहार हल्का लें दालें कम खायें हरी सब्जियाँ अधिक सेवन करें। आर्थोजिन कैप+आर्थो+आर्थोजिन ऑयल+अग्निवर्धक चूर्ण कोर्स 30 दिन हेतु।

कोर्स मूल्य 2000 रु. डाकखर्च सहित। ■

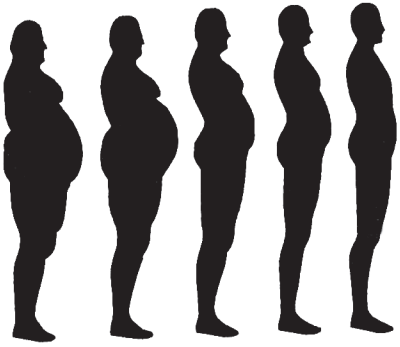

स्लीमोरी कोर्स

मोटापा पैतृक प्रभाव से भी होता है और गलत ढंग से आहार–विहार करने के कारण भी। मोटापा सिर्फ स्वयं ही एक व्याधि नहीं है बल्कि कुछ अन्य व्याधियों को जन्म देने वाली जड़ भी है जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि ये दोनों व्याधियां गुर्दो की कार्यक्षमता को नष्ट करने (Chronic Renal Failure) वाले कारणों में प्रमुख हैं। जिनका पैतृक इतिहास मोटापे का हो उन्हें तो आहार–विहार के मामले में सतर्क रहना चाहिए साथ ही जो मोटापा बढ़ने का अनुभव करें उन्हें भी सतर्क हो जाना चाहिए क्योंकि मोटापा बढ़ने पर इसे घटाना कठिन होता है।

लाभ– यह कोर्स मोटापा कम करने के लिए गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसके साथ ही प्रमेह और कफ वृद्धि को दूर करने में भी उपयोगी है। यह मेद वृद्धि को रोकता है, शरीर को चुस्त–दुरुस्त और तेजस्वी बनाता है। **स्त्री–पुरूषों के लिए समान रूप से सेवन योग्य और लाभकारी है।** इसको सेवन करने के साथ–साथ दो औषधियां और सेवन करना चाहिए। स्लीमोरी की 1–1 कैप्सूल सुबह, दोपहर एवं रात को सोते समय गरम जल के साथ लेने से मोटापा कम होता है और शरीर पुष्ट व शक्तिशाली बनता है। इसे खाना सरल है इसलिए मोटापे बढ़ाने वाला आहार–विहार न खाकर मोटापा कम करने वाला आहार–विहार खाते हुए इस कोर्स का सेवन करना चाहिए। **(पाउडर+कैप्सूल) 30 दिन कोर्स। कोर्स मूल्य 1500 रु. डाकखर्च सहित।**

■

मनुष्य के तीन प्रकार

संसार में तीन तरह के मनुष्य होते हैं–नीच, मध्यम और उत्तम। जो मनुष्य विघ्नों के भय से कोई काम शुरू ही नहीं करते वे नीच स्तर के होते हैं। जो काम तो शुरू कर देते हैं पर विघ्न बाधा आते ही बीच में ही काम को छोड़ देते हैं वे मध्यम स्तर के होते हैं और जो व्यक्ति विघ्न होने पर भी काम को पूरा करके ही दम लेते हैं वे उत्तम स्तर के मनुष्य होते हैं।

केश प्लस कोर्स

हमारे प्राचीन अग्रजन्मा ऋषियों ने वानस्पतिक मेध्य द्रव्यों में ब्राह्मी–बूटी तथा शंखपुष्पी एवं भृंगराज पर विशेष ध्यान दिया है। जो जड़ी बूटियाँ बुद्धि को बढ़ाती है। वे बुद्धि से सम्बन्धित विकारों जैसे उन्माद, अपस्मार माइग्रेन के लिए भी उपयोगी होते हैं। हिमालय की घाटी में गंगा तट पर उत्पन्न होने वाली हरी ब्राह्मी के गुणों से कौन परिचित नहीं? यह बूटी एक अलग औषधी है जिसके गुणों का आदर बड़े–बड़े विद्वानों ने किया है। हमारे ऋषि–मुनियों ने इसके निरन्तर प्रयोग से मानसिक शक्ति के अनोखे चमत्कार दिखाये गये हैं। इसी हरी ब्राह्मी बूटी के रस से **केश प्लस** कोर्स तैयार किया जाता है। वैसे **केशप्लस तेल** बहुत लोग बनाकर बेचते हैं। परन्तु हमारे बनाने की विधि अलग है। हम इस तेल में ब्राह्मी कारस, गुलाब के फूल, सफेद चन्दन, सुगन्ध बाला, भृंगराज आदि अनेकों औषधियाँ डालते हैं जिससे इसके गुणों में वृद्धि हो जाती है। आधुनिकता में नवयुवतियों का मुख्य श्रृंगार बालों का लम्बा घना तथा चमकीला एवं मुलायम होना है। अतः यह उपरोक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है आपके श्रृंगार में नया निखार उत्पन्न करता है। विशेषता यह है कि हमारा **केश प्लस तेल** सिर में चिपक पैदा नहीं करता। यह बालों की रूसी (Dandruff) को खत्म करता है तथाबालों को झड़नें से रोकता है। इसलिए बालों के शौकीन नवयुवक और नवयुवतियों के बालों के समस्त दोषों को दूर कर काले करता है इसके साथ 1–1 कैप्सूल मानोरिया भी लें। **30 दिन कोर्स (ऑयल+टेबलेट) मूल्य 1500 रु.** ■

मधुमेह (डायबिटीज) क्या है?

आजकल मधुमेह (शुगर) पीड़ितों की संख्या में दिन–प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। एलोपैथी में मधुमेह को डायबिटीज कहते हैं। इस रोग से मनुष्य के शरीर में पेनक्रियाज नामक अवयव में पाये जाने वाले सेल के किसी कारणवश नष्ट हो जाने अथवा कार्य बंद कर देने से इंसुलिन पाचन रस का बनना बंद हो जाता है। भोजन की पाचन क्रिया द्वारा कार्बोहाइड्रेट्स जब ग्लूकोज बनकर रक्त में मिलते हैं तो इन्सुलिन की कमी से ये ग्लूकोज शक्ति एवं गर्मी में परिवर्तित न होकर रक्त में ही रह जाता है, इससे रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ जाती है, और एक हद से गुजर जाने पर गुर्दे द्वारा यही ग्लूकोज मूत्र मार्ग से निकलने लगता है। आग जलाने के लिए जिस प्रकार दियासलाई की जरूरत होती है, उसी प्रकार चीनी युक्त भोजन यानी कार्बोहाइड्रेट्स की पाचन क्रिया को पूरा करने में इन्सूलिन की जरूरत होती है।

मधुमेह हो जाने पर पाचन क्रिया बिगड़ जाती है। खाद्य पदार्थों का रस परिपाक ठीक नहीं होता और इसी प्रकार यकृत लीवर का काम भी ढीला पड़ जाता है। आधुनिक एलोपैथिक डॉक्टर विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पेट में लीवर और पेनक्रियाज में पित्त और ऐसे पाचक रस निकलते हैं जो खाद्य पदार्थों का परिपाक करने में मदद करते हैं और तब खाद्य पदार्थों में रहने वाली चीनी को यह शरीर बर्दाश्त नहीं कर पाता।

मधुमेह का मुख्य कारण

मधुमेह में अत्यधिक एवं बार–बार प्यास लगना, अत्यधिक भूख लगना, बहुमूत्र, बार–बार पेशाब होना, शारीरिक शक्ति की कमी होना, स्त्रियों की योनेद्रियों में खुजली होना, पुरुषों में नामर्दी एवं ताकत की कमी होना और कपड़े में पेशाब की बूँद लगने और सूखने पर सफेद पदार्थ–सा जम जाना व अधिक समय बीतने पर और भी उपद्रव समाने आते हैं। जैसे शरीर में झनझनाहट, सूनापन, सुई चुभने की पीड़ा सा होना स्पर्श ज्ञान की कमी या शून्यता दर्द विशेषतः जांघों की पिंडलियों में, कई प्रकार के हृदय रोग, रक्तचाप बढ़ जाने से घबराहट, धड़कन बढ़ना, श्वास फूलना, आँखों की ज्योति का मंद होना, एकाएक ज्योतिहीन हो जाना, लकवा मार जाना, संज्ञाहीन हो जाना, यह मधुमेह के लक्षण हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमने प्राकृतिक एवं शुद्ध जड़ी–बूटियों द्वारा औषधि का निर्माण किया है। जिसके सेवन करने से शरीर में स्वतः ही इन्सुलिन पाचन रस का पुनः निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है तथा भोजन की पाचनक्रिया द्वारा कार्बोहाइड्रेट्स ग्लूकोज में बनकर रक्त में मिलने को रोकने में सहायक होता है।

मधुमेह नाशक कोर्स मांगने हेतु आज ही श्री गंगा डिपो, क्लीनिक हरिद्वार फोन करें। डाक द्वारा दवा भेजने की सुविधा उपलब्ध है। ऑर्डर फोन पर भी दे सकते हैं।

30 दिन का कोर्स 2000 रु. डाकखर्च सहित।

फोनः 08057888802

डॉ. एन.के. सिंघल

श्री गंगा डिपो क्लीनिक नं. 21, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

(प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक फोन– 08057888802 करें)

No Side effect totally Herbal Treatment

सवाल आपके : जवाब श्रीगंगा डिपो क्लीनिक से

✉ **मेरी शादी तीन महीने बाद होगी। गलत संगति के कारण मेरी कामशक्ति बहुत क्षीण हो गयी है। कई जगह इलाज कराने के बाद भी निराशा ही हाथ लगी। क्या आपके यहां मेरा इलाज हो जायेगा?**

—सोमनाथ पाठक (लक्सर)

☞ आप निश्चित रहें। आप जैसे असंख्य युवा हमारे **गंगा कामराज स्पेशल कोर्स** से पूर्ण लाभ प्राप्त कर चुके हैं। आप आज ही **गंगा कामराज कोर्स** मंगाये, पूरी जानकारी के लिए फोन पर संपर्क करें।

✉ **पिछले दिनों अपने मित्र को सहजता से पैदल चलते देख आश्चर्य हुआ। वे पहले जोड़ों के दर्द से परेशान थे तथा स्टिक के सहारे ही बमुश्किल चल पाते थे, अब वे कैसे ठीक हुए? यह पूछने पर उन्होंने आपके संस्थान का पता बताया तथा कहा कि श्रीगंगा डिपो क्लीनिक के जोड़ों के दर्द के स्पेशल कोर्स से उन्हें कष्टप्रद जोड़ों के दर्द से मुक्ति मिली है। चूंकि मेरी पत्नी भी जोड़ों के दर्द की बीमारी से बहुत परेशान है। अतः मैं चाहता हूँ कि उनके लिए भी आपके यहां से स्पेशल कोर्स मंगायें। कृपया मार्गदर्शन करें।**

—चरणजीत (बिहार)

☞ जोड़ों में दर्द, घुटनों में दर्द की समस्या व्यापकता से बढ़ती हुई बीमारी के रूप में देखी जा रही है जिसकी प्रमुख वजह हमारी बदली हुई लाइफ स्टाइल है। आप हमारी क्लीनिक पर फोन द्वारा आर्डर भेजकर **गंगा अर्थोज़िन स्पेशल कोर्स** मंगा लें और दिए गए दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए अपनी पत्नी को प्रयोग करायें। कुछ ही दिनों में वे राहत महसूस करने लगेंगी।

✉ **विगत 6 वर्ष पूर्व ज्ञात हुआ कि मुझे डायबिटीज है, तब से अंग्रेजी दवा ले रहा हूँ। विगत कुछ समय में मैं सहवास शक्ति में कमी महसूस कर रहा हूँ। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस रोग तथा इसमें ली जाने वाली अंग्रेजी दवाई के साइड इफेक्ट के कारण यौन शक्ति में कमी आ जाती है। मैं परेशान हूँ। क्या आपके यहाँ ऐसा इलाज है जिससे शुगर लेविल नार्मल रहे तथा खोई हुई यौन शक्ति भी पुनः प्राप्त हो सके।**

—उमेश कुमार (दिल्ली)

☞ आपकी समस्या डाइबिटीज रोगियों में पायी जाने वाली एक आम समस्या है। हमारा **गंगा डायबिटीज स्पेशल कोर्स** बड़ी हुई रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। पहले आप **गंगा® डायबिटीज स्पेशल कोर्स** मंगाकर शुगर कन्ट्रोल करें, पश्चात् यौन शक्ति बढ़ाने के लिए हमारा **गंगा® कामराज स्पेशल कोर्स** मंगायें, फोन से संपर्क करके अपना इलाज शुरु करें। कुछ ही दिनों में फर्क महसूस करेंगे।

✉ **प्रश्न– मैं एक युवक हूँ, मेरी उम्र 27 वर्ष है, अभी मेरी शादी हुए कुछ माह हुए हैं। मुझे मूत्र निकास के समय बहुत जलन व खुजली होती है। मूत्र का रंग कुछ पीला सा है। अत्यधिक खुजली रहती है तथा इंन्द्रिय की बाहर की खाल पर छोटे से सफेद दाने भी है। मैं बहुत कष्ट में हूँ। कृपया उचित उपचार बताने कर कष्ट करें।**

–प्रीतम भदौरिया, लखनऊ

☞ प्रीतम जी, आपको मूत्र नली में इन्फेक्शन है तथा खाल पर दाने इस कारण है कि आप सफाई नहीं रखते। मूत्र त्याग के पश्चात् मूत्रेन्द्रिय को स्वच्छ पानी से धोना चाहिए। स्नान के समय भी ऐसा ही करें। खाने–पीने में अधिक गरम पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। निंबू पानी व बेल का जूस गर्मियों में अवश्य लें। सर्दियों में फलों का जूस व पानी खूब पियें। तले हुए पदार्थ, मिर्च मसालेदार व भुने हुए भोजन चाट–पकौड़ी आदि का प्रयोग भी उपचार के दौरान बन्द रखे। दोपहर में भोजन में मट्ठा या दही का प्रयोग करें। औषधि आप गंगा मदनानंद कोर्स का सेवन करें।

✉ **प्रश्न– मैं एक युवती हूँ, मेरी उम्र लगभग 28 वर्ष है। मुझे मासिक धर्म होने से पूर्व योनि वस्ति तथा पेट व कमर में दर्द होता है, भारी**

विशेष–हमारे क्लीनिक पर आयुर्वेदिक चिकित्सा से जटिल/कठिन रोग, स्त्री–पुरुषों के यौन रोग तथा सौंदर्य से जुड़ी समस्याओं का इलाज सफलता पूर्वक किया जाता है। इलाज हेतु औषधि प्राप्त करने के लिए फोन पर जानकारी लें अथवा अपाइन्टमेंन्ट लेकर निम्न पते पर अभी तक की गयी जांच रिपोर्ट्स के साथ हमारी क्लीनिक को भेजें। क्लीनिक पर आने में असुविधा होगी वे पूरी जानकारी फोन पर देकर डाक से घर बैठे दवा मंगा सकते हैं।

ध्यान दें–गंगा की औषधियों को खरीदते समय पैकिंग अवश्य देख लें।

नोट– विवाह पूर्व एवं विवाह पश्चात् की समस्त सेक्स समस्याओं पर उचित परामर्श एवं सफल इलाज के लिए हमारी क्लीनिक पर संपर्क करें।

कष्ट होता है माहवारी के समय लेटे रहने की ही इच्छा रहती है। कोई आयुर्वेदिक उपचार बताने की कृपा करें। *–प्रेमलता (खतौली)*

☞ फलों एवं सब्जियों का अधिक सेवन करें तथा ल्यूकोरारी कोर्स का सेवन करें।

☒ **प्रश्न– मेरी उम्र 25 साल है। मेरे विवाह को एक साल के ऊपर हो गयाहै। मैं बहुत दुबली–पतली हूँ तथा मेरे वक्ष का विकास भी कम है। मुझे अपने को बड़ा हीन महसूस करना पड़ रहा है। कृपया कोई उचित सलाह देने का कष्ट करें।** *–सीमा (उज्जैन)*

☞ आप गंगा ब्रेस्ट ऑयल की मालिश वक्षों में गोलाई से करें। मालिश हल्के–हल्के करें। शरीर की पुष्टता के लिए गंगा ब्रेस्ट पाउडर चूर्ण को दूध से पकाकर अथवा दो चम्मच चूर्ण को दूध में घोलकर पिए व ऊपर से थोड़ा दूध और पिएं ताकि चूर्ण गले में न चिपके। आप 3–4 छुआरों को दूध में पकाकर नाश्ते के समय दो केले के साथ लें। अवश्य ही लाभ होगा तथा गंगा वक्ष वृद्धि कोर्स का 1 मास तक सेवन करें। कीमत रु. 1800 एक माह का।

(धातुस्राव और शीघ्रपतन)

☒ **प्रश्न– मैं एक 22 वर्षीय युवक हूँ। गलत संगति के कारण मैं हस्तमैथुन का शिकार हो गया हूँ। जिसके कारण धातुस्राव व शीघ्रपतन के विकार से पीड़ित हूँ। आयुर्वेद विमर्श में निर्देशित कुछ दवाओं का सेवन किया जिससे धातुस्राव में कमी आयी है। पहले मुझे स्वप्नदोष तीसरे–चौथे दिन होता था, परंतु अब आठ–दस दिन बाद होता है। फिर भी कमजोरी बनी हुई है कृपया इन विकारों से छुटकारा पाने का कोई उपाय बताएं।** *–अनिल (जगाधरी)*

☞ बुरे विचारों को मन से उत्पन्न न होने दें और न ही किसी के भयभीत होने पर डरें। आपकी सारी शिकायतें दूर हो जाएंगी।

निवारण– आप गंगा कामराज स्पेशल कोर्स का सेवन करें तथा पौष्टिक आहार एवं समय से सोने जागने का नियम बनाएं।

(श्वास रोग दमा)

☒ **प्रश्न– मेरी उम्र 40 वर्ष है। मैं श्वास रोग (दमा) से पीड़ित हूँ। यह रोग लगभग आठ वर्ष पुराना है। इधर साल भर से इसका दौरा अधिक पड़ने लगा है जिससे अधिक कष्ट होता है। अंग्रेजी दवा पर कुछ दिन ठीक रहता है लेकिन दवा बंद करने पर फिर शुरू**

हो जाता है। आपसे अनुरोध है कि इस कष्टदायी रोग की कोई आयुर्वेदिक दवा बताएं। *–गुरमीत सिंह, पटियाला*

☞ दमा एक कष्टसाध्य रोग है। जब तक दवा का सेवन करते रहें तो यह दबा रहेगा, परंतु दवा बंद कर देने पर यह उभर जाता है। इसकी दवा निरन्तर चालू रखनी चाहिए। आप निम्न औषधियों का सेवन करें, इससे दमा के दौरों से राहत मिलेगी एवं दमा ठीक हो जायेगा। **गंगा अस्थमारी कोर्स** मंगाकर सेवन करें व धूल, सीलन, धूम्रपान से बचें।

(उच्च रक्तचाप)

☒ **प्रश्न– मुझे उच्च रक्तचाप की शिकायत है, साथ ही कई अन्य बीमारियाँ भी है, जैसे खूनी बवासीर, कब्ज, अनिंद्रा, हाथ–पैरों में दर्द आदि। कृपया, आप मेरी समस्याओं पर गौर करके उचित समाधान करें।** *–नरेन्द्र सिंह (जयपुर)*

☞ आप 1 महीने स्लीमोरी कोर्स सुबह एवं शाम ले। इसके अतिरिक्त **गंगा अर्थोजिन ऑयल** से हाथ पैरों की मालिश एक मिनट तक करें।

(उदर रोग से पीड़ित)

☒ **प्रश्न– मैं साल भर से उदर रोग से परेशान हूँ जिसके कारण काफी कमजोर हो गया हूँ पेट हमेशा गड़बड़ रहता है। खाना ठीक से हजम नहीं होता। कब्ज बनी रहती है और शौच साफ नहीं होता है। नींद भी ठीक से नहीं आती और पेशाब में जलन होती है। कृपया, कोई आयुर्वेदिक दवा बताएं।** *–सुरेश गोयल (दिल्ली)*

☞ आजकल की भाग–दौड़ वाली जीवनशैली और खान–पान की बदपरहेजी के कारण अधिकांशलोग उदर रोग से पीड़ित है। पेट की गड़बड़ी के कारण ही अनिद्रा और पेशाब जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। उदर विकारों से बचने के लिए अपने खानपान पर विशेष ध्यान दें। भोजन में मसालों व तैलीय पदार्थों का प्रयोग कम से कम करें। भोजन में भारी (गरिष्ठ) और पीठे के बने पदार्थों से परहेज रखें। हरी पत्तेदार सब्जियाँ, नींबू, सलाद आदि का सेवन अधिक करें। आयुर्वेदिक औषधियों में **गंगा अग्निवर्धक कोर्स+लवण भास्कर चूर्ण** मिलाकर सेवन करें।

✉ **प्रश्न– मेरे तलुवों में शरीर के अन्य अगों की अपेक्षा ठंडक अधिक महसूस होती है। यह ठंडक धीरे–धीरे सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है। नींद भी कम आती है। एक वैद्यजी को दिखाया तो उन्होंने इसे शीतांग वात की बीमारी बतायाहै। उनके उपचार करने पर कुछ आराम तो हुआ, लेकिन अब पुनः वही शिकायत हो गई है। ठंड के मौसम में यह परेशानी असाध्य हो जाती है। इससे पूरी तरह छुटकारा पाने के लिए कोई उचित सलाह दें।** *नीरू (कालकाजी)*

☞ आपने जो लक्षण बताये हैं वे सिर्फ शीतांगवात रोग में ही होता है यह रोग सर्दियों में अधिक होता है सर्दी के दिनों में इसके लिए गंगा अर्थोजिन कोर्स का उपयोग करें।

सुपाच्य आहार का सेवन करें। इस रोग में तिल, गुड़, मूंगफली, चना, उड़द, गाजर, मोसम्बी, संतरा, काजू, बादाम, गाय का दूध, देसी घी, मक्खन आदि का सेवन लाभप्रद होता है। योगासन, तेज चलना आदि 15 से 30 मिनट तक प्रतिदिन जरूर करें। अर्थोजिन तेल से मालिश रोजाना करें। एक बाल्टी या टब में सहने लायक गर्म पानी में नमक डालकर 10 मिनट तक रात को पैर डुबो कर रखें। इन उपायों को करने से लाभ होगा। दवा 1 माह तक सेवन करें। ■

सिंह विजयपाक

(मूसली पाक, मूसली केशर एवं कौंच युक्त)

यह पाक केवल औषधि ही नहीं है यह एक प्रकार का टॉनिक है।

मूल्य– 400 ग्राम 1400 रु.
एवं 800 ग्राम 2700 रु.।

निर्माताः **श्री गंगा डिपो, हरिद्वार**

आपका पत्र मिला

अर्श (बवासीर)

डॉ. साहब नमस्ते हमने आपसे बवासीर का सुझाव माँगा था। आपने हमें पाईलैक्सो स्पेशल कोर्स भेजा था। बड़ी प्रसन्नता के साथ बताना चाहता हूँ कि मुझे 10 दिन में आराम आ गया था और एक महीने में अर्श के मस्से सूखकर गिर गए। ईश्वर आप पर कृपा बनाए रखे।

–दिनेश अग्रवाल (काशीपुर)

शुक्राणु बढ़ें

आदरणीय डॉ. सिंघल जी समाचार यह है कि मुझे निल शुक्राणु की बीमारी थी और सभी डॉक्टर दोबारा शुक्राणु बनने की बात को नकार चुके थे। फिर हमारे गाँव के प्रधान जी ने मुझे आपके बारे में बताया और मैंने आपसे इलाज करवाया आज 2 माह बाद मेरे शुक्राणु की 75 प्रतिशत मात्रा में बन गए हैं। मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

–नवनीत (अम्बाला)

पुत्र प्राप्ति

मैं पिछले 10 वर्षों से बेऔलाद था बच्चा होना नामुमकिन था। डॉ. सिंघल जी की दवा लगातार 6 माह तक सेवन करने के बाद आज मेरे दो बच्चे हैं। मुझे अत्यन्त लाभ हुआ। धन्यवाद!

–आदित्य बंसल (कोटद्वार)

जोड़ों के दर्द

मैं पिछले 22 वर्षों से जोड़ों के दर्द (गठिया) से अत्यधिक परेशान था चलना फिरना नामुमकिन था। डॉ. सिंघल जी की दवा लगातार 6 माहतक सेवन करने के बाद आज मैं दौड़ रहा हूँ। मुझे अत्यन्त लाभ हुआ।

–अनुज कुमार (दौसा)

औषधि सूचि			मूल्य
गंगा सत शिलाजीत	50 ग्राम	30 दिन हेतु	₹ 750/–
(सूर्यतापी)	100 ग्राम	60 दिन हेतु	₹ 1500/–
सा.सत शिलाजीत	50 ग्राम	30 दिन हेतु	₹ 850/–
(सूर्यतापी मधुमेह नाशक)	100 ग्राम	60 दिन हेतु	₹ 1700/–
शिलाजीत कैप्सूल	30 कैप्सूल	15 दिन हेतु	₹ 400/–
	60 कैप्सूल	30 दिन हेतु	₹ 750/–
गंगा मदनानंद कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2000/–
(कैप+पाउडर+तेल)			डाक खर्च सहित
कामराज स्पेशल कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2000/–
(कैप+पाउडर+तेल)			डाक खर्च सहित
पाईलैक्सो स्पेशल कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2000/–
(कैप+कैप+पाउडर)			डाक खर्च सहित
त्यूकोरैक्स गोल्ड कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2000/–
(कैप+पाउडर+तेल)			डाक खर्च सहित
गंगा आर्थोज़िन गोल्ड कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2400/–
(कैप+कैप+ऑयल+पाउडर)			डाक खर्च सहित
मधुमेह स्पेशल डाइबिटीज कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 2000/–
(कैप+कैप+टैब+पाउडर)			डाक खर्च सहित
गंगा स्लीमोरी कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 1500/–
(कैप+कैप+पाउडर)			डाक खर्च सहित
सत शिलाजीत कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 1500/–
(रसायन+टैबलेट+चूर्ण)			डाक खर्च सहित
केश प्लस कोर्स		30 दिन हेतु	₹ 1500/–
(ऑयल+टैबलेट)			डाक खर्च सहित

औषधि सूचि		मूल्य
पाईलैक्सो कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(बवासीर, अर्श, में रामबाण)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
पाईलैक्सो ऑयल	30 मिली	₹ 300/–
(बवासीर, अर्श में रामबाण)	60 मिली	₹ 550/–
अस्थमारी टैबलेट (कैप्सूल)	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(दमा, सूखी खाँसी में अचूक)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
काँसोना टैबलेट	60 टैबलेट	₹ 400/–
(खाँसी में अचूक योग)	120 टैबलेट	₹ 750/–
मदनानंद कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
	120 कैप्सूल	₹ 950/–
गंगा कामराज ऑयल	30 मिली 1 शीशी	₹ 400/–
(नपुंसकता नाशक तेल)	90 मिली 3 शीशी	₹ 1100/–
गंगा विजय जीवन कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(नपुंसकता नाशक कामशक्ति बढ़ायें)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
गंगा सैक्सोमैक्स कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 600/–
(स्त्री–पुरुष के लिए अपूर्व शक्तिदायक)	120 कैप्सूल	₹ 1150/–
त्यूकोरारी कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(श्वेत प्रदर व रक्त प्रदर के लिए)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
त्यूकारैक्स कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(अनियमित एवं कठिन माहवारी के लिए)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
गौरी चूर्ण (अनियमित माहवारी नियमित करें)	400 ग्राम	₹ 850/–
गंगा केश प्लस (ब्राह्मी तेल)	100 मिली	₹ 300/–
गंगा सौन्दर्य बहार क्रीम	50 ग्राम 1 बॉटल	₹ 300/–
(क्रान्ति प्रलेप)	50 ग्राम 3 बॉटल	₹ 850/–
गंगा मकरध्वजवटी (कैप)	60 कैप	₹ 1000/–
सिंह विजयपाक	400 ग्राम	₹ 1400/–
(धातुक्षीणता, दुर्बलता, प्रमेह रोग में लाभदायक)	800 ग्राम	₹ 2700/–

औषधि सूचि		मूल्य
मदनानंद पाउडर	400 ग्राम	₹ 1400/–
(शीघ्रपतन एवं प्रमेह रोग में लाभदायक)	800 ग्राम	₹ 2700/–
गंगा मानोरियाँ कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(माइग्रेन में अचूक, बुद्धिवर्धक योग)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
गंगा अग्निवर्धक चूर्ण	100 ग्राम	₹ 300/–
(पाचनशक्ति बढ़ाये, कब्जनाशक)	1 किलोग्राम	₹ 2800/–
गंगा डिसेन्ट्रीना टैबलेट	60 टैबलेट	₹ 500/–
(दस्त से तुरंत राहत के लिए)	120 टैबलेट	₹ 950/–
गंगा आर्थोज़िन कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(वात रोग, गठिया, गाउट में लाभदायक)	120 कैप्सूल	₹ 950/–
गंगा आथोज़िन ऑयल	100 मिली	₹ 400/–
(वात रोग, गठिया में मालिश के लिए)	300 मिली	₹ 1100/–
गंगा आर्थो प्लस कैप्सूल	60 कैप्सूल	₹ 500/–
(आर्थराइटिस, गठिया दर्द में लाभदायक)	120 कैप्सूल	₹ 950/–

हमारे वितरक बनें!!

- बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश के लिए पर डिस्ट्रीब्यूटरशिप आमंत्रित है।
- किराना दुकान व मेडिकल स्टोर मालिक, चिकित्सक व औषद्यालयों के लिए आकर्षक स्कीम में ऑफर उपलब्ध है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

मो.– 08057888802, 09837573936
मैंनेजर श्रीगंगा डिपो आयुर्वेदिक फार्मेसी
हरिद्वार, उत्तराखण्ड

औषधियाँ मंगाने के नियम–

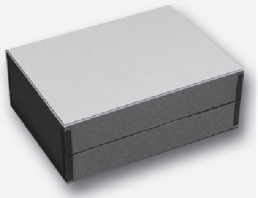

1. आज के युग में फोन पर ऑर्डर देना सर्वोत्तम साधन है। इसके लिये E-mail, SMS करें या हमारे नं. 8057888802 पर कॉल करें। इस नम्बर पर आप ऑर्डर दे सकते हैं– 9412070569
2. पत्र व्यवहार केवल हिन्दी या अंग्रेजी में ही करना चाहिए पत्र केवल रजिस्टर्ड डाक या कोरियर से भेजे। **(साधारण डाक न भेजें)**
3. आर्डर देने के 10 दिन बाद औषधियाँ या रोग पत्र न मिले तो सोचना चाहिए कि डाक विभाग या अन्य किसी गलती के कारण आपका पत्र नहीं पहुंचा है तो पुनः आप टेलीफोन द्वारा सम्पर्क करें, टेलीफोन, ई–मेल या वाट्सऐप पर ही देने की कोशिश करें, अगर आर्डर डाक द्वारा भेजते हैं तो केवल रजिस्टर्ड डाक द्वारा ही भेजें। रजिस्टर्ड डाक का खर्चा चिकित्सालय वहन करता हैं। रजिस्टर्ड डाक की धनराशि आपके बिल में कम कर दी जाती है।
4. ग्राहकों से निवेदन है कि पत्र में रोग एवं औषधियों का नाम तथा रोगी संख्या साफ–साफ लिखनी चाहिए तथा अपना पूरा पता अपने प्रत्येक पत्र में बहुत साफ अक्षरों में लिखना चाहिए। पिन कोड न. टेलीफोन नं. व मोबाईल नं. अवश्य लिखें।
5. 500 रूपये से कम की औषधियां मंगाने वालों को आर्डर के साथ औषधियों का मूल्य एवं डाक खर्च अग्रिम भेजना चाहिए या बैंक एकाउन्ट में जमा करें।
6. औषधियाँ भेजने से पूर्व भली भाति जांच कर ली जाती है फिर भी यदि कोई गलती रोगपत्र में मालूम हो तो दवा छुड़ा लीजिए और हमें लिखिए या फोन से सम्पर्क करें। गलती ठीक कर दी जाएगी, वी.पी. वापिस मत कीजिए वरना डाक व्यय दोबारा लग जाएगा।
7. औषधियों के सम्बन्ध में कोई भी पत्र व्यवहार करते समय हमारा रोगी नम्बर लिखें।
8. अगर आप बैंक द्वारा रुपये भेजते हैं तो आपको **श्री गंगा डिपो हरिद्वार** पी.एन.बी., अपर रोड A/C No. 0199005500000216, में पैसा जमा करें।
9. न्याय संबंधी सभी विवाद हरिद्वार न्यायालय में ही तय होंगे।
10. पोस्ट ऑफिस मीनऑर्डर, कमीशन 5/– रु. प्रति 100 के दर से चार्ज करता है। इससे बचत के लिए एडवांस दे या बैंक में जमा करें।
11. आप ऑर्डर Email व वाट्स एप (Whats App) पर भी भेज सकते हैं। (Whats App) वाटस एप नं. 9412070569 है। ■

रत्न एवं रूद्राक्ष विमर्श

पंडित कैलाश पांडे (गंगा घाट हरिद्वार)

श्री गंगा रत्न एवं रूद्राक्ष डिपो (स्थापित 1905) का उद्देश्य व निवेदन

आज की 21वीं शताब्दी में प्रत्येक मनुष्य किसी ने किसी कारण से दुखी है, कोई निर्धनता से दुखी है, कोई शारीरिक रोगों से पीड़ित है, किसी को मानसिक परेशानी है तो कोई मेहनत का फल नहीं मिलने से दुखी हे। हर मनुष्य तेजी से बढ़ते हुए उन्नति के शिख्र पर पहुंच जाना चाहता है। इसके लिए जरूरी है कि परिश्रम के साथ मन्त्र, तन्त्र, जप–यज्ञ, टोटके–यन्त्र तथा रत्नों का प्रयोग नियम से किया जाये। इसको जानने के लिए मनुष्य को भविष्यवक्ताओं तथा ज्योतिषाचार्यों के पास पहुँचना पड़ता है। ये इनको, इनके दुख को दूर करने तथा मनोकामना पूर्ण करने के लिए रत्न धारण तथा यन्त्र पूजन आदि उपाय बताते हैं तथा मनुष्य इन पर विश्वास करते हुए अपना लक्ष्य पाने के लिए सुझाव गये उपायों पर चलने लगता है। इन सबके बावजूद भी यदि व्यक्ति फिर भी अपने मनोरथ में सफल नहीं हो पाता है तो इसका कारण क्या है, यही समझाने के लिए यह पुस्तक लिखने का विचार बनाया है।

अपनी ग्रह बाधाओं को दूर करने तथा अपना उन्नति शिखर पाने के लिए मनुष्य इन रत्नों तथा अष्ट धातुओं का प्रयोग अति प्राचीन काल से करता आ रहा है तथा इससे वह लाभ भी उठाता आ रहा है। इसका पता पौराणिक ग्रन्थों में बहुधा देखने को मिलता है। इन सबको करने के बावजूद यदि मनुष्य दुखी है तो इसका मतलब आप शायद यह समझेंगे कि यह सब प्रभावशाली नहीं है। परन्तु इसका मतलब ऐसा नहीं है। इसका मतलब यह है कि सफलता पाने के लिए या तो प्रयोग लगन से नहीं हुआ है या वह नकली नग धारण किये हुये है। वह रत्न दोषपूर्ण है और विधिवत धारण न किया गया है। ऐसा भी सम्भव है कि उसने अपने ग्रह से सम्बन्धित सही नग न धारण किया गया है। यदि पूर्ण समझदारी तथा अच्छे ज्योतिषाचार्य तथा विधि–विधान से कोई नग धारण किया जाता है वह अपना कार्य अवश्य ही पूर्ण करता है, यह शास्त्र–संगत बात है तथा लेखक की आजमाई हुई है। इससे जुड़े कितने ही किस्से मेरे साथ घटित हुए हैं, परन्तु यहाँ हमें ज्यादा गहराई में नहीं जाना है। मैंने अपने संपूर्ण जीवन के परिश्रम से जो बातें अनुभव की हैं मैं उन्हीं अनुभवों के आधार पर इस पुस्तक में सही रत्नों की जानकारी तथा किस व्यक्ति को कौन–सा रत्न धारण करना चाहिए, कौन सा रूद्राक्ष धारण करना चाहिए, कौन से मन्त्र की पूजा करनी चाहिए तथा किस माला से जाप करना चाहिए, कौन सा यन्त्र स्थापित करना चाहिए आदि का संक्षेप में वर्णन कर रहा हूँ। इस पुस्तक को यदि कोई भी आदमी एकान्त में पूर्ण चित्त के साथ अध्ययन करेगा तो अपने लिए उचित वस्तु का चयन ठीक ढंग से कर सकेगा तथा इन रत्न–रूद्राक्ष–यन्त्र आदि की सहायता से अपने जीवन में उमंग तथा तरंग का सरस बहाव पैदा करने में स्वयं सक्षम होगा।

नवरत्न

1. **हीरा**– यह सर्वाधिक कठोर और मूल्यवान रत्न होता है। यह सफेद गुलाबी, पीले तथा काले रंग में पाया जाता है। ज्योतिषकी दृष्टि से यह शुक्र ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना गया है।
2. **पन्ना**– यह हरा या सफेद मिश्रित हरे रंग का रत्न होता है। यह पारदर्शी तथा अपारदर्शी दोनों ही प्रकार का होता है। इसे बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है।
3. **पुखराज**– यह पीले अथवा सफेद रंग का रत्नीय पत्थर होता है। यह पारदर्शी होता है। ज्योतिष की दृष्टि से इसे बृहस्पति का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है।
4. **नीलम**– नीलम मोर की गर्दन के समान गहरे नीले रंगा का अथवा पारदर्शी हल्के नीले रंग का होता है। गहरे नीले रंग के नीलम को बैंकाक का नीलम कहते हैं। हल्के नीले रंग के पारदर्शी नीलम को सीलोनी नीलम कहते हैं। यह शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न होता है।
5. **माणिक**– यह रत्न लाल रंग का श्रेष्ठ होता है, किंतु श्याम वर्ण–मिश्रित लाल रंग के भी माणिक होते हैं। इसे सूर्य का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है। जहां तक इसके प्रभाव का प्रश्न है लाल व श्याम–मिश्रित लाल रंग वाले दोनों का प्रभाव समान ही होता है।
6. **मूँगा**– यह प्रायः लाल, सिंदूरी तथा सफेद रंगों का होता है। इसे मंगल ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना गया है।
7. **मोती**– मोती प्रायः सफेद रंग का आबदार रत्न होता है। साथ ही यह हल्के गुलाबी तथा हल्के पीले रंगों में भी प्राप्त होता है। ज्योतिषीय दृष्टि से इसे चन्द्रमा का रत्न माना गया है।
8. **गोमेद**– यह कालापन लिये हुए लाल रंग का अथवा पीलापन मिश्रित लाल रंग का होता है। साथ ही यह गोमूत्र के रंग का भी होता है। इसे राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना गया है।
9. **लहसुनिया**– इसका रंग कुछ कालापन लिये हुए हरा या पीला भी होता है। इसमें बिल्ली की आँख के समान धारी होने से इसे विडालाक्ष भी कहते हैं। यह केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न होता है। ■

रत्न एवं रूद्राक्ष डिपो मंसा देवी रोड हरिद्वार-249401

रत्न एवं रूद्राक्ष सूची मूल्य	मूल्य
एक मुखी रूद्राक्ष	₹ 1600/– बिना चाँदी टोपी पूजा हेतु ₹ 1900/– चाँदी की टोपी सहित (गले में पहनने के लिये)
दो मुखी रूद्राक्ष	₹ 700/– प्रति पीस
तीन मुखी रूद्राक्ष	₹ 250/–प्रति पीस एवं नोपाली 400/– प्रति पीस
चार मुखी रूद्राक्ष	₹ 400/– प्रति पीस
पाँच मुखी रूद्राक्ष	₹ 100/– प्रति पीस
छः मुखी रूद्राक्ष	₹ 250/– प्रति पीस
सात मुखी रूद्राक्ष	₹ 800/– प्रति पीस
आठ मुखी रूद्राक्ष	₹ 6000/– प्रति पीस
नौ मुखी रूद्राक्ष	₹ 7500/– प्रति पीस
दस मुखी रूद्राक्ष	₹ 7500/– प्रति पीस
ग्यारह मुखी रूद्राक्ष	₹ 9000/– प्रति पीस
बारह मुखी रूद्राक्ष	₹ 9000/– प्रति पीस
तेरह मुखी रूद्राक्ष	₹ 14000/– प्रति पीस
चौदह मुखी रूद्राक्ष	₹ 29000/– प्रति पीस
गणेश मुखी रूद्राक्ष	₹ 1500/– प्रति पीस
गौरी शंकर रूद्राक्ष (नेपाली स्पेशल)	₹ 7000/– प्रति पीस

रूद्राक्ष मालाएँ (108 दाने की) पंचमुखी

सबसे बड़ी (पंचमुखी रूद्राक्ष माला)	₹ 500/– प्रति पीस
मीडियम	₹ 700/– प्रति पीस
छोटी	₹ 1000/– प्रति पीस
सबसे छोटी	₹ 1200/– प्रति पीस
काली मीर्च के बराबर	₹ 1100/– प्रति पीस
स्फटिक रूद्राक्ष (मिक्स) माला (108 दाने की)	₹ 1100/– प्रति पीस

रत्न-रूद्राक्ष ऑर्डर हेतु- 08057888802 पर कॉल करें।

रत्न एवं रुद्राक्ष सूची मूल्य — मूल्य

रत्न

	वजन 5.25 रत्ती	वजन 7.25 रत्ती	वजन 9.25 रत्ती
माणिक	₹ 1500/– प्रति नग	₹ 2100/– प्रति नग	₹ 2700/– प्रति नग
मोती	₹ 900/– प्रति नग	₹ 1200/– प्रति नग	₹ 1600/– प्रति नग
मूँगा	₹ 1500/– प्रति नग	₹ 2100/– प्रति नग	₹ 2700/– प्रति नग
पन्ना	₹ 3000/– प्रति नग	₹ 4000/– प्रति नग	₹ 5000/– प्रति नग
पुखराज	₹ 5000/– प्रति नग	₹ 7000/– प्रति नग	₹ 9000/– प्रति नग
नीलम	₹ 5000/– प्रति नग	₹ 7000/– प्रति नग	₹ 9000/– प्रति नग
गोमेद स्पे.	₹ 800/– प्रति नग	₹ 1100/– प्रति नग	₹ 1300/– प्रति नग
लहसुनिया स्पे.	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग	₹ 1200/– प्रति नग

उपरत्न

सुनैला स्पे.	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग	₹ 1200/– प्रति नग
कटैला स्पे.	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग	₹ 1200/– प्रति नग
ऑनेक्स स्पे.	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
लाजवर्त स्पे.	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
स्फटिक	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
गारनेट स्पे.	₹ 500/– प्रति नग	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग
जरकन	₹ 500/– प्रति नग	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग
जरकन स्पे.	₹ 600/– प्रति नग	₹ 850/– प्रति नग	₹ 950/– प्रति नग
ओपल	₹ 500/– प्रति नग	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग
ओपल स्पे.	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग	₹ 1100/– प्रति नग
फिरोजा स्पे.	₹ 500/– प्रति नग	₹ 700/– प्रति नग	₹ 900/– प्रति नग
यमनी हकीक	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
सुलेमानी हकीक	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
मैगनेट स्टोन	₹ 300/– प्रति नग	₹ 400/– प्रति नग	₹ 500/– प्रति नग
मरियम स्टोन	₹ 200/– प्रति नग	₹ 250/– प्रति नग	₹ 300/– प्रति नग
टाईगर	₹ 200/– प्रति नग	₹ 250/– प्रति नग	₹ 300/– प्रति नग
हकीक	₹ 250/– प्रति नग	₹ 350/– प्रति नग	₹ 450/– प्रति नग

नोट– 9.25 रत्ती से अधिक वजन के रत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं उनका मूल्य नीचे लिखे नं. पर फोन करके प्राप्त किया जा सकता है।

रत्न-रूद्राक्ष ऑर्डर हेतु- 08057888802 पर कॉल करें।

स्फटिक माला

स्फटिक माला गोल व कटिंग (108 दाने की)	₹1000/–, ₹1500/–
स्फटिक माला स्पेशल कटिंग (108 दाने की)	₹ 1200/–
चन्दन माला स्पेशल (108 दाने की)	₹ 350/–
तुलसी माला स्पेशल (108 दाने की)	₹ 300/–
लाल चन्दन माला (108 दाने की)	₹ 300/–
हकीक माला 108 दाने की (सभी रंगों में)	₹ 500/–
कमल गट्टा माला स्पेशल (108 दाने की)	₹ 300/–
वैजन्ती माला स्पेशल (108 दाने की)	₹ 300/–
मूँगा माला	₹ 700/– प्रति पीस
मोती माला मीडियम	₹ 1000/– प्रति पीस
स्फटिक निर्मित गणेश, नंदी आदि	₹ 1200/– प्रति पीस
स्फटिक शिवलिंग, बाण लिंग	₹ 1000/– प्रति पीस
स्फटिक श्री यंत्र मेरू आकार	₹ 1500/– प्रति पीस
पारद शिवलिंग (25/– प्रति ग्राम)	₹ 2500/– (100 ग्राम)

117 Years of Trust

नोट : पारद शिवलिंग कम से कम 50 ग्राम का मंगवायें।

शंख

स्पेशल वामवर्ती शंख (बजने वाला)	₹ 1500/– प्रति पीस
स्पेशल दक्षिणावर्ती शंख	₹ 300, 400, 500, 600, 700, 800, 1000 प्रति पीस
यन्त्र ताम्र पात्र पर अंकित (सभी आकार में)	
2" × 2"	₹ 200/– प्रति पीस
3½" × 3½"	₹ 400/– प्रति पीस
7" × 7"	₹ 500/– प्रति पीस
12" × 12" (श्री यंत्र)	₹ 1000/– प्रति पीस
कच्छप पृष्ठ पर पंच धातु श्रीयंत्र मेरू आकार	₹ 500/– प्रति पीस
पंच धातु श्रीयंत्र मेरू आकार	₹ 700/– प्रति पीस
हल्दी माला 108 दाने की	₹ 300/– प्रति पीस

117 Years of Trust

रत्न-रूद्राक्ष ऑर्डर हेतु- 08057888802 पर कॉल करें।

गुरू रत्न पुखराज (Yellow Saffire)

यह एक मूल्यवान खनिज पत्थर है। अपने रासायनिक विश्लेषण में इसमें एल्यूमीनियम, हाइड्रोविसम और क्लोरीन जैसे तत्वों की उपस्थिति रहती है। यह महानदी, ब्रह्मपुत्र, हिमालय, श्रीलंका, रूस, आयरलैंड में अधिक पाया जाता है। यह भारी तथा पारदर्शी पत्थर होता है। पुखराज हल्के पीले रंग में अधिक पाया जाता है, इसमें अन्दर चीड़–फाड़, दाग–धब्बे, धुंधलापन, जाला, अवश्य पाया जाता है। महँगे से महँगे पुखराज को भी आई ग्लास से देखा जाये तो उसके अन्दर कुछ न कुछ अवश्य ही दिखाई देगा। अत्यधिक मूल्यवान खुदरंग इसका अपवाद है, परन्तु इतना महँगा पुखराज हर व्यक्ति की पहुँच से बाहर होता है। इसलिए असली पुखराज की पहचान इसके अन्दर चीड़फाड़, दाग–धब्बे या जाले देखकर की जाती है। श्रींका का पुखराज सबसे उत्तम श्रेणी का माना जाता है। पुखराज को विद्वानों की भाषा में पुष्प राग कहते हैं। आजकल ज्यादातर पुखराज पहनने के बाद कुछ हल्के रंग के हो जाते हैं। परन्तु इनका यह रंग छोड़ना नकली होने की पहचान नहीं हैं, बल्कि यह पुखराज का पैदाइशी गुण है। बहुत ही थोड़ी मात्रा में खुदरंग पुखराज प्राप्त होते हैं। खुदरंग पुखराज दूसरे पुखराजों के मुकाबले काफी महँगे होते हैं। असली पुखराज को धूप में देखने से पीली किरण निकलती प्रतीत होती है।

पुखराज की विशेषता तथा धारण करने से लाभ–

पुखराज गुरू ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। पुखराज पहनने से गुरू ग्रह से सम्बन्धित समस्त दोष शान्त हो जाते हैं। धनु राशिवालों को पुखराज पहनना अति शुभकारी होता है। पुखराज धारण करने से बल, बुद्धि, आयु, स्वास्थ्य, यश, कीर्ति व मानसिक शान्ति की प्रप्ति होती है। इसको धारण करने से व्यापार तथा व्यवसाय की आय में वृद्धि होती है। पुखराज को बृहस्पति जी का प्रतीक माना गया है, बृहस्पति जी को देवगुरू का स्थान प्राप्त है (इसलिए इन्हें गुरू भी कहा जाता है), इसलिए पढ़ाई–लिखाई के क्षेत्र में उन्नति का कारक माना जाता है। यदि कन्याके विवाह में विलम्ब हो रहा हो तो पुखराज धारण करने से शीघ्र सुलभ हो जाता है। पति सुखके लिए पुखराज धारण करना श्रेष्ठ है, यह पति पत्नि के बीच की बाधा को दूर कर गृहस्थ जीवन को सफल व सुखी बनाता है। पुखराज मानसिक शान्ति प्रदान करके मान–प्रतिष्ठा को श्रेष्ठकर व दीर्घायु प्रदान करता है। लेखक, वकील, बुद्धिजीवी, व्यवसायियों के लिए विशेष लाभकारी है।

यह परिवार के सभी सदस्यों, भाई–बहन, माता–पिता, कुटुम्ब–परिवार के रिश्तों में प्रेम बढ़ाता है। पुखराज का स्वामी गुरू होने के कारण इसे साधु–सन्यासी, महात्मा सभी धारण कर सकते हैं। पुखराज अपने को धारित व्यक्ति के गौरव को बढ़ाकर रूके हुए कार्यों को पुनः शुरू करवाता है। मित्रता को बल प्रदान कराता है। पुखराज चर्म रोग नाशक बल–वीर्य की वुद्धि करने वाला होता है।

पुखराज को धारण करने की विधि–

पुखराज कम से कम सवा पाँच रत्ती का पहनना चाहिये, वैसे सवा पाँच, साढ़े पाँच, या इससे अधिक वजन का पुखराज तुरन्त प्रभाव दिखाने वाला होता है। पुखराज के नग को सोना, चाँदी या ताँबे में जड़वाना चाहिए। बुधवार को अँगूठी को कच्चे दूध तथा गंगाजल में शुद्ध करके बृहस्पतिवार प्रातःकाल सूर्योदय के समय केले के वृक्ष से स्पर्श कराकर इष्टदेव का स्मरण करके निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुये धारण करनी चाहिए–

पुखराज धारण करने का मंत्र

" ॐ ग्रां ग्रीं गौं सः गुरूवे नमः"

नोट– पुखराज जिस दिन धारण किया जाता है उसे दिन से चार वर्ष तीन माह अठारह दिन तक प्रभाव अधिक प्रदर्शित करता है।

नीलम (Blue Saphhire)

यह एक मूल्यवान खनिज पत्थर है। अपनी रासायनिक विश्लेषण में यह एल्यूमीनियम, ऑक्सीजन तथा गोबाल्ट का यौगिक है। यह कुरून्दन समूह का रत्न है। नीलम नीला, हल्का नीला, आसमानी, बैंगनी, रंगों का होता है। यह भारी तथा पारदर्शी पत्थर है, कुछ स्थानों पर मिलने वाले नीलम हरे रंग के भी होते हैं तथा इनमें पारदर्शिता काफी कम होती है। सूर्य की रोशनी में देखने से इनमें कुछ पारदर्शिता दिखलायी देती है, परन्तु ज्यादातर नीलम अपारदर्शी ही होते हैं। इनके हल्के तथा गहरे रंग से इनके प्रभाव में कुछ भी अन्तर नहीं होता है। नीलम के अन्दर चीड़–फाड़, दाग–धब्बे धुंधलापन या जाला अवश्य ही पाया जाता है। असली नीलम की पहचान इसके अन्दर के दाग से ही होती हे। इनका मूल्य भी इनके अन्दर पाये जाने वाले दाग पर ही निर्भर होता है। जितना कम दाग वाला नीलम होगा उतना ही अधिक मूल्यवान होगा। कभी–कभी बिल्कुल

बेदाग असली नीलम भी देखने में आते हैं। परन्तु यह इतने महँगे होते हैं कि आम आदमी इसे खरीदने में असमर्थ महसूस करता है। ज्यादातर नीलम पहनने के बाद कुछ मामूली हल्के रंग के हो जाते हैं। परन्तु इससे इनके प्रभाव पर कोई असर नहीं पड़ता है। कुछ मात्रा में बिल्कुल खुदरंग नीलम भी आते हैं। परन्तु यह दूसरे नीलम से काफी महँगे होते हैं। नीलम बर्मा, श्रीलंका, बैंकाक, भारत, आस्ट्रेलिया आदि देशों में पाया जाता है। भारत में नीलम कश्मीर तथा उत्तराखण्ड के पहाड़ों पर बर्फ के पहाड़ों के नीचे पाया जाता है। नीलम सबसे अच्छा भारतीय खानों का होता था परन्तु अब सरकार ने यह खानें बंद कर दी हैं। इसलिए अब आसानी से उपलब्ध नहीं है। उपलब्ध नीलमों में सबसे ज्यादा माँग श्रीलंका के नीलम की है।

नीलम की विशेषता तथा धारण करने से लाभ–

नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधित्व रत्न है। अतः नीलम पहनने से शनि से सम्बन्धित समस्त दोष शान्त हो जाते हैं। मकर तथा कुम्भ राशि वालों को नीलम पहनना अति शुभकारी होता है। नीलम के विषय में कहा जाता है कि यह रत्न सबसे शीघ्रता से अपना प्रभाव दिखाता है। नीलम का प्रभाव शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार का होता है। इसलिए नीलम परीक्षण करने के उपरान्त धारण करना चाहिए अथवापहले जामुनिया (कटैला) धारण करके देखलेना चाहिए। यदि जामुनियाआपको किंचित मात्र में भी फायदा देता है तो आप नीलम निश्चिंतता से पहन सकते हैं। नीलम का शुभ या अशुभ प्रभाव जानने के लिए नीलम को दाहिने हाथ में नीले कपड़े की सहायता से बाँध लेना चाहिए अथवारात में सोते समय अपने तकिये के नीचे रख लेना चाहिए। इससे यदि आपको कुछ नुकसान न हो तथा शुभ स्वप्न आयें या शुभ समाचार मिलें तो नीलम पहनना शुभ है। यदि विपरीत परिस्थितियाँ बनें तो नीलम पहनना अशुभ है और यदि परिस्थितियाँ समान रहें तथा कुछ भी नुकसान न हो तो भी नीलम पहनना शुभ है। परन्तु नीलम कुम्भ तथा मकर राशिवालों को कभी नुकसान नहीं पहुँचाता है। नीलम शनि की साढ़े–साती का दुष्प्रभाव दूर करता है। यह यदि अनुकूल पड़े तो धन–धान्य, सुख–सम्पत्ति, मान–सम्मान, यश–गौरव, आयु, बुद्धि, बल तथा वंशकी वृद्धि करके मुख को अलौकिक आभा मण्डल से चमका कर नेत्र ज्योति को बढ़ता है।

नीलम खोई सम्पत्ति को वापस दिलाता है। इसे धारण करके मन पवित्र होता है तथा दुष्कर्मों से मुक्ति मिलती है। मन सत्कर्म में लगता है। सत्य,दया, परोपकार के विचार धारणकर्ता के चित्त में बसने लगते हैं। ट्रांसपोर्टर, जमीन–जायदाद, ठेकेदार, कारखानेदार, व्यापारी, पुलिस ऑफिसर आदि को यह विशेष तरक्की दिलाता है तथा नौकरी, व्यापार में उन्नति करता है। जिनके बाल झडत्र रहे हों तथा बालों में खुजली रहती हो वह नीलम धारण करके इन परेशानियों से मुक्ति पासकते हैं। नीलम के बारे में यह कहावत सर्वविदित है कि नीलम यदि माफिक पड़े तो यह रंक (भिखारी) को रातों–रात राजा बनाने की क्षमता रखता है, समाज में इसके बहुदा उदाहरण हैं कि जिन व्यक्तियों को नीलम पूर्ण रास आ गया उनकी किस्मत बहुत कम समय में मुकद्दर का सिकन्दर बनी है तथा जिनको मध्यम रास आया है उनका भी फायदा ही पहुँचा है। नीलम दिन–दूनी रात चौगुनी उन्नति करता है।

नीलम धारण करने की विधि–

नीलम कम से कम सवा तीन रत्ती का धारण करना चाहिए। इससे और भारी वजन का नीलम और भी अधिक प्रभवशाली होता है। नीलम को सोने या चाँदी या लोहे की अँगूठी में जड़वाना चाहिए।

शुक्रवार की रात को नीलम की अँगूठी को ताँबे के बर्तन में कच्चा दूध तथा गंगाजल डालकर थोड़ा मीठा मिलाकर रख देना चाहिए, तत्पश्चात् शनिवार की सुबह शनि भगवान का स्मरणकरते हुए दूध तथा गंगाजल को भगवान शंकर के मन्दिर में अथवा पीपल वृक्ष की जड़ में चढ़ा दें तथा अँगूठी निकाल कर निम्न मन्त्र का जाम करते हुए मध्यमा उँगली में धारण कर लें।

नीम धारण करने का मंत्र

"प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"

या

"ह्रीं श्री शनैश्चराय नमः"

नोट– नीलम जिस दिन धारण किया जाये उस दिन में पाँच वर्ष तक अपना प्रभाव अधिक प्रदर्शित करता है। ■